श्रीमते रामानुजाय नमः श्री नियै नमः श्री सद्गुरवे नमः

श्री सुदर्शन संदेश

अगस्त 2017

15/-

वर्ष 14 अंक: 9

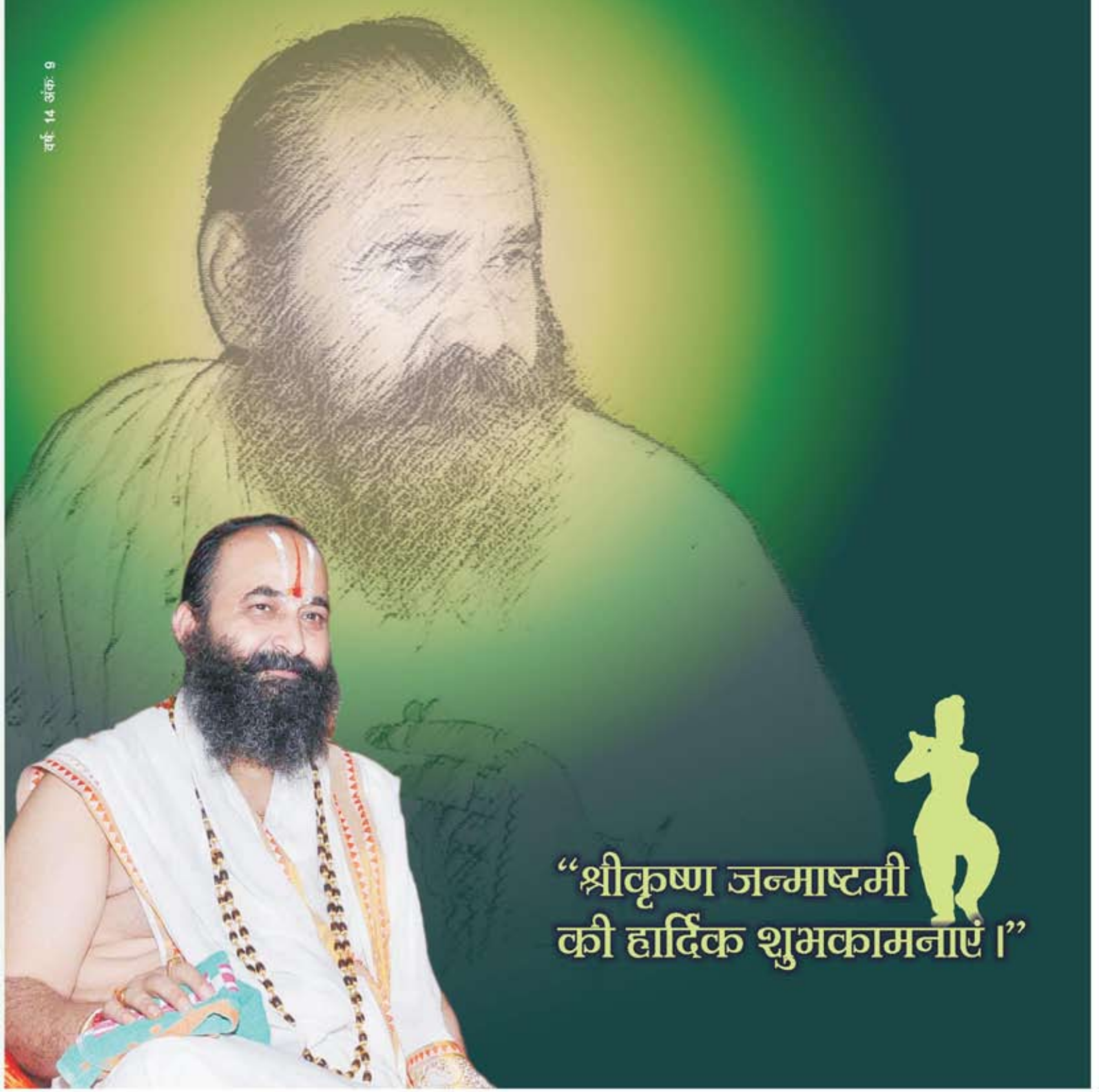

"श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
की हार्दिक शुभकामनाएं।"

श्रीगुरूपूर्णिमा महोत्सव की झलकियां

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम श्री गुरू पूर्णिमा के अवसर पर वैकुंठवासी महाराज का पूजन करते श्रीगुरू महाराज, 2.श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज का पूजन करते सर्वश्री गोबिन्दजी, रोहित जी, केडी शर्मा जी व अन्य, 3. भक्तों को प्रवचन देते, 4.भजनों की पुस्तक गुरू वन्दना का विमोचन करते 5. सामूहिक आशीष देते एवं 6 भक्तों को प्रसाद प्रदान करते श्रीगुरूमहाराज, 7.मस्ती में झूमते भक्तजन। 8.भोजन प्रसाद की सेवा करते एवं 9.एवं लंगर सेवा करते भक्तजन।

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

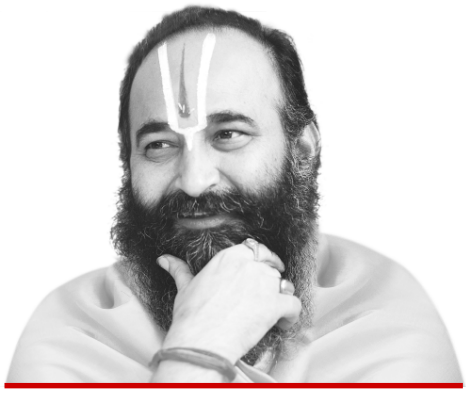

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

प्रवचनांश

जब आप किसी कार्य में पूरी तन्मयता से डूब जाते हैं, आपकी आध्यात्मिक प्रक्रिया वहीं से शुरू हो जाती है। फिर चाहे आप झाड़ू लगा रहे हों, भोजन पका रहे हों या भजन कर रहे हों। जरूरी यह है कि आप जो भी करें, वो मन से करें। आध्यात्किता भी आपको मन रमाने की ही बात बताती है। जब आपको मन रमाने की प्रेक्टिस हो जाएगी, तब आपका मन परमात्मा में भी सरलता से लगने लगेगा। तब कृपा आने से भला कौन रोक सकेगा।

गुरूवाणी

यदि सांप फुफकार नहीं मारेगा तो सांप को भला कौन मानेगा? उसके ऊपर तो पांव रखकर लोग चलेंगे। उसे कुचल देंगे और चीटियां उसे खा जायेंगी। यदि फन फैलाकर सर्प फुफकार मार दे तो लोग कहेंगे कि सांप है, इससे बचकर चलो। यह सामान्य सी बात है। वैसे ही संतों का क्रोध वैसा नहीं होता है जिससे लोगों के मन को दुख पहुंचे। संतों के क्रोध में ईर्ष्या और प्रतिशोध की भावना नहीं होती है। यदि क्रोध में ईर्ष्या और प्रतिशोध मिल गया तो समझो जप, तप, ध्यान, ज्ञान और तपस्या आदि सब धरी रह गई। संत स्वयं परमात्मा के शरणागत हैं और आपको भी वही मार्ग बता रहे हैं जिसमें आपकी उन्नति होगी। शरणागति का मार्ग स्वीकार करने में ही आनन्द है।

वैकुंठवासी महाराज

छायाचित्र

⏭ *श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में देश विदेश से आने वाले भक्तों का तांता लगा ही रहता है। ऐसे ही जर्मनी से आए एक समूह में शामिल युवा हमारे परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज से आशीर्वाद लेते हुए।*

पत्रिका में अपने अनुभव व लेख संपादकीय कार्यालय को भेजें।

सलाहकार मंडल : रामेश्वर सिंह, डी. सी. तंवर, के. डी. शर्मा (एडवोकेट)
संपादक : शकुन रघुवंशी (श्रीधर)*
एसोसिएट एडिटर : गीता 'चैतन्य'

संपादकीय पता: श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, सूरजकुण्ड रोड, सेक्टर-44, फरीदाबाद, हरियाणा फोन: 0129-2419555, 717

www.shrisidhdataashram.org
info@shrisidhdataashram.org

स्वत्वाधिकारी, जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रहलाद शर्मा ने मैसर्स मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794-95, गुरु रामदास नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से मुद्रित करवाकर ई-9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली-110091 से प्रकाशित किया। संपादक : शकुन रघुवंशी*

*अवैतनिक

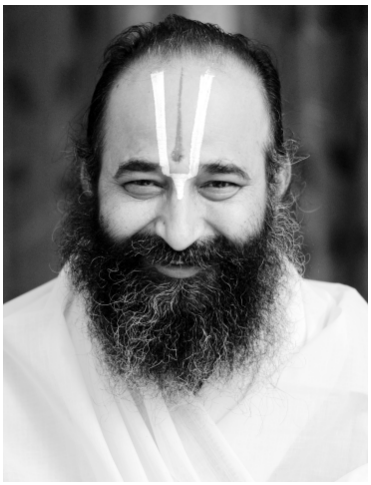

गुरू के कृपा प्रसाद में सुख

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, *पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद*

एकाकी निस्पृहः शान्तः चिंतासूयादिवर्जितः। बाल्यभावेन यो भाति ब्रह्मज्ञानी स उच्यते॥88।
न सुखं वेदशास्त्रेषु न सुखं मन्त्रयन्त्रके। गुरोः प्रसादादन्यत्र सुखं नास्ति महीतले॥89॥

अर्थात् *श्रीगुरुगीता के इस श्लोक में भगवान शंकर बता रहे हैं कि ब्रह्मज्ञानी कौन है, किसे हम ब्रह्मज्ञानी कह सकते हैं। वहीं अगले श्लोक में वह संसार में सुख की तलाश में भटक रहे लोगों को, मुमुक्षुओं को, ज्ञानियों को बता रहे हैं कि कर्तापने में सुख नहीं है। यह सुखा किन्हीं कोशिशों में नहीं है। यह कारणों से तो मिलने वाला है ही नहीं। तो कैसे मिलेगा। गुरुकृपा ही केवलं। वह बता रहे हैं कि गुरु की कृपा से ही सुख की प्राप्ति हो सकती है। फिर चाहे वह भौतिक पदार्थों से सुख देवें या आध्यात्मिक ज्ञान के जरिए हमें सुख देवें। यह उनकी मर्जी है लेकिन हमारे करने लायक एक ही कर्म है और वह है गुरुजी की कृपाओं को प्राप्त करना। और यह कृपा गुरु के बताए मार्ग पर चलने से स्वतः ही मिलती है।*

अर्थ : *अकेला, कामनाओं से रहित, शांत चित्त वाला, चिन्ताओं से मुक्त, ईर्ष्या से रहित और बालक के समान शोभायमान ही ब्रह्मज्ञानी कहलाता है। और वह जानता है कि वेदों, शास्त्रों में सुख नहीं है, मन्त्र और यन्त्र में भी सुख नहीं है। वास्तव में इस पृथ्वी पर गुरु की कृपा प्रसाद के सिवाय कहीं सुख नहीं है।* जारी.

वर्षः 14, अंकः 9
अगस्त 2017

कहां:क्या

वैकुंठवासी महाराज
शरणागति को अपनाया तो मिला परमानन्द 08
पुराने जन्मों के संस्कार 40

गुरुदेव
संदेश 03
गुरुवाणी 04
गुरू गीता (सरल) 05
कमल की तरह गुरू साथ होते हुए भी अलग हैं 10
सरल भक्त भगवान को प्रिय होते हैं 34

अन्य
संपादकीयः जीने की कला 06
रिसोर्स योरसेल्फ : प्रेम होगा तो छलकेगा भी, उसे रोका न जा सकेगा 07
वास्तु : तुलसी से दूर करें वास्तुदोष 27
सेहतः पंचकर्म के फायदे 28
सितंबर महीने के पर्व 38

जीने की कला

संपादकीय : गीता चैतन्य

मानव जीवन बड़ा ही जटिल है। इसे जीने के लिए भी कला होनी चाहिए। इस जटिल जीवन में सब कुछ हमारे लिए सकारात्मक ही नहीं होता है, कभी कभी कुछ ऐसी घटनायें घट जाती हैं कि मानव हृदय घोरतम निराशा के वशीभूत होकर जीवन को ही समाप्त करने की इच्छा करने लगता है, और कुछ लोग तो समाप्त भी कर देते हैं जिसे आत्महत्या का नाम दिया जाता है। कुछ लोग हर बात में कहा करते हैं कि अब जीवन जीने की इच्छा शेष नहीं रही। जबकि रात और दिन की तरह मनुष्य के जीवन में आशा, निराशा के क्षण आते जाते रहते हैं। आशा जहाँ जीवन में संजीवनी शक्ति का संचार करती है, वहाँ निराशा मनुष्य को मृत्यु की ओर ले जाती है। हमारी निराशा का बहुत कुछ कारण होता है– यथार्थ को स्वीकार न करना, अपनी कल्पना और मनोभावों की दुनिया में रहना। निराश व्यक्ति जीवन से उदासीन और विरक्त होने लगता है। उसे अपने चारों ओर अंधकार फैला हुआ दीखता है। एक दिन निराशा आत्महत्या तक के लिए मजबूर कर देती है मनुष्य को, जब कि मृत्यु के मुँह में जाता हुआ व्यक्ति भी आशावादी विचारों के कारण जी उठता है। श्रेयार्थी को निराशा की बीमारी से बचना आवश्यक है अन्यथा यह तन और मन दोनों को ही नष्ट कर जीवन का महत्व ही समाप्त कर सकती है।

प्रेम होगा, तो छलकेगा भी, उसे रोका न जा सकेगा...

रिसोर्स योरसेल्फ

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

अध्यात्म का एक अर्थ परमात्मा से प्रेम करना भी है। परमात्मा से प्रेम करना, उसकी कायनात से प्रेम करना, उसके नीति नियमों से प्रेम करना और अपने जीवन में उन्हें स्वीकार करना भी अध्यात्म है अर्थात् प्रेम है।

यकीन मानिए ये जो करोड़ों लोगों की भीड़ धर्मस्थलों पर जुटती है, इनमें से अधिकांश का परमात्मा से कोई संबंध नहीं है। इनमें से अधिकांश लोग परमात्मा के नाम पर बनाए घरों में केवल अपने मकसदों को पूरा करने के लिए पहुंचते हैं, रहते हैं। जब इनके मकसद पूरे नहीं होते या उनके पूरा होने में कोई खलल पड़ता है तो वह परमात्मा के नाम पर की गई सभी चर्चाओं व ज्ञान की पुड़ियों को भूल जाते हैं। वह न केवल परमात्मा के साथ सौदेबाजी करते हैं बल्कि लौकिक जीवन के भगवान अर्थात् गुरु और गुरुभाइयों को भी छलने से बाज नहीं आते हैं।

मुझे बताएं जो परमात्मा प्रेम का सागर है, उसके आंगन में आने वाला प्रेम के बिना कैसे रह सकता है?

एक बात ध्यान रखें : ज्ञान हो या प्रेम, यह स्वीकार करना पड़ता है। झुकना पड़ता है लेकिन जो ताड़ के पेड़ की तरह अड़ कर बैठेगा, वो कैसे झुकेगा, कैसे स्वीकार करेगा अर्थात् वह प्रेम नहीं कर सकता। उसका हर कर्म निजता की नीचता लिए होगा।

अरे जिसके अंतस में प्रेम उगा है, वह प्रेम दिखेगा भी और झलकेगा भी। उसे रोका न जा सकेगा। उसका प्रेम सार्वजनिक होगा, होकर ही रहेगा।

शरणागति को अपनाया तो मिला परमानन्द

सभी प्रकार के प्रयोगों से ईश्वरीय व्यापार में वृद्धि नहीं हो सकती है। वृद्धि तो परमार्थ से ही होगी। किसी ने कहा भी है–

सकल कर्म कर थकेऊ (मानस)

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज

संस्थापक–श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

प्रेमियों! ये सकल कर्म इस शरीर ने कर लिए हैं और जब सकल कर्मों से दुखी हो गया, कहीं सहारा नजर नहीं आया, यम की मार दीखने लगी, मृत्यु का भय सदा बना रहा। सबको त्याग करके कहा, 'त्रहिमाम् शरणागतम् त्राहिमाम शरणागत्'– मेरी रक्षा कर, मेरी रक्षा कर। वह बोले, मैं तेरी रक्षा क्यों करूं। तो मैंने कहा कि मैं तेरी शरणागत हो गया हूं, इसलिये मेरी रक्षा करो। क्षण में छूट जाने वाली सांसारिक वस्तुओं की तरफ लोगों का जितना झुकाव हो रहा है, उतना स्वांस के मालिक प्यारे परमात्मा में नहीं नजर आता है। बड़े-बड़े प्रेमी भक्त कहाने वालों का बेटा-बेटी के ब्याह में जितना उत्साह होता है, उस समय जितना खर्च करने के लिए उदारता आती है, उस तरह प्रेम से भगवान के उत्सव में भगवान के लिए किन्चित् भी नहीं पायी जाती है। पुत्र होने के समय महीनों गाना

बजाना उत्सव, उत्साह सुनने में आता है, उस प्रकार भगवान के उत्सव में देखने में नहीं आता है। जो दुनिया में अपने को उच्चकोटि का भक्त मानते हैं, उनके घर में भी उनकी स्त्री पुत्रों के लिए जितने भूषण वस्त्र देखने में आते हैं, उतने उनके सेवा विग्रह के श्रृंगार सजावट के लिए नहीं। जंवाई के आने पर जितने प्रकार के पदार्थ बनते हैं, उतने प्रकार के भगवान् के भोग के लिए कभी नहीं बनाये जाते।

मेरे प्रेमियों! हमने शरणागति को स्वीकार करके देखा है। हम आप लोगों को केवल कथा नहीं सुना रहे हैं। रामायण अथवा भागवत नहीं बांच रहे हैं। मीमांसा का इतिहास नहीं बता रहे हैं। हम आपको अपने जीवन का अनुभव कर रहे हैं। अनेक प्रयत्नों के पश्चात् भी हमें सुख और संतोष का अनुभव नहीं हुआ है। किन्तु जब शरणागति को करके देखा तो परम आनन्द का अनुभव हुआ। आप लोगों से सच कहता हूं अब किसी प्रकार का दुख नहीं है। हम हमेशा हंसते ही रहते हैं। हमारे शरीर में नाना प्रकार की बीमारियां भी हों तो भी किसी प्रकार के दुख का अनुभव नहीं करते। पीड़ा को महसूस नहीं करते, केवल हंसते ही रहते हैं। यह विशाल मंदिर बन रहा है। यह बन रहा है तो हम हंस रहे हैं और नहीं बने तो भी हंस रहे हैं। यदि हमारे ट्रस्टी ये कहें कि आप तो गुस्सा भी कर लेते हो। तो भाई, यदि सांप फुफकार नहीं मारेगा तो सांप को भला कौन मानेगा? उसके ऊपर तो पांव रखकर लोग चलेंगे। उसे कुचल देंगे और चीटियां उसे खा जायेंगी। यदि फन फैलाकर सर्प फुफकार मार दे तो लोग कहेंगे कि सांप है, इससे बचकर चलो। यह सामान्य सी बात है। वैसे ही संतों का क्रोध वैसा नहीं होता है जिससे लोगों के मन को दुख पहुंचे। संतों के क्रोध में ईर्ष्या और प्रतिशोध की भावना नहीं होती है। यदि क्रोध में ईर्ष्या और प्रतिशोध मिल गया तो समझो जप, तप, ध्यान, ज्ञान और तपस्या आदि सब धरी रह गई। संत स्वयं परमात्मा के शरणागत हैं और आपको भी वही मार्ग बता रहे हैं जिसमें आपकी उन्नति होगी। शरणागति का मार्ग स्वीकार करने में ही आनन्द है।

शरणागति को हर सन्त ने स्वीकार किया है। तुलसीदास जी ने भी किया–

एक आस बिस्वास भरोसा हरो जीव जड़ताई, मेरी बिनती रघुवीर गुसाईं।

चहौंन सुगति संपति कछु रिधि सिधि विपुल बड़ाई।। (विनय पत्रिका)

वह तो इतने शरणागत हो गये कि उन्हें किसी महिमा की जरूरत ही नहीं है। मुझे भी कोई इच्छा नहीं है कि कोई मेरी आरती उतारे। मैं तो बाबाजी से और नीचे हो जाऊं।

क्रमशः

जब प्रभु के प्रति संकल्प शक्ति जागृत हो जायेगी, तब स्वतः ही मन और बुद्धि निर्मल हो जायेंगे। पापाचरण की प्रवृत्ति नहीं होगी। मन में दुष्कर्म के भाव तो आयेंगे ही नहीं। यह सब कुछ अनन्य भाव से शरणागति का प्रभाव है।

कमल की तरह गुरू साथ होते हुए भी अलग हैं

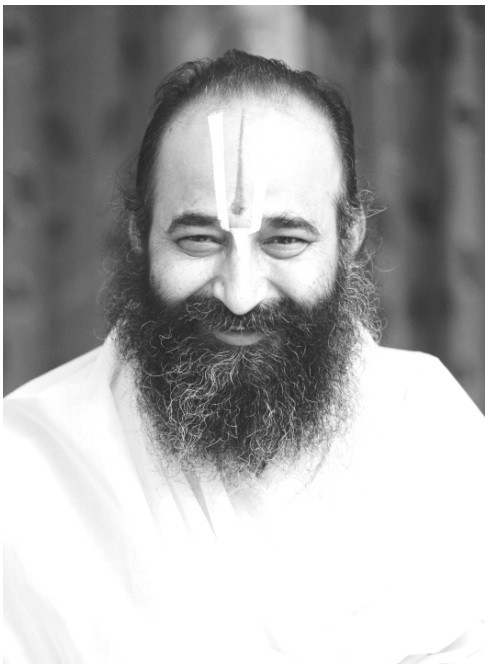

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज,
पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

आप सभी जानते हैं यह संसार और इसका संबंध नाशवान है। और सभी संत और ग्रंथ भी यही कहते हैं। और यह क्षणिक भी है। हमारा गर्भ में 9 माह उलटे लटका रहना और वहां का भयानक दुख भोगना यह बड़ी बला है। और परिवार को रोते चिल्लाते उन्हें छोड़कर खुद भी रोते हुए अत्यन्त मेहनत से कमाई हुई सारी संपत्ति छोड़कर इच्छा के बिना मर जाना, यह भी भयंकर बला है।

भला कौन मरना चाहता है। विचार कीजिए हमारा अंतिम समय तक तो मन परिवार की आसक्ति में रहता है, पैसे में रहता है। सरकार हमें साठ वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त कर देती है और हम फिर भी काम की तलाश में रहते हैं। पहले बोलते थे कि इसके बाद सेवा करेंगे, भजन करेंगे। पर हो नहीं पाता। यह भी बड़ी बला है।

संसार में आया हुआ कोई भी मनुष्य इससे बचा ही नहीं है। गर्भ का भयानक दुख सब भोगते हैं, मृत्यु का डर भी सबके मन में रहता है।

मृत्यु निश्चित है। यह सत्य है।

हमें विचार करना चाहिए कि इस जन्म से छुटकारा कैसे मिले। इसके लिए कौन सा उपाय करना चाहिए। यह संसारी सुख तो

क्षणिक है। यह छूट जाने वाला है। जो आज भाई-बंधु, कुटुम्ब, महल, मकान, नाम, जाति आदि जिसे पाकर हम अपने आपको धन्य मान रहे हैं। यह हमेशा के लिए नहीं है। यह सब छूट जाने वाला है। शरीर के जितने भी संबंधी हैं सदा के लिए अपने नहीं। ना ये गर्भ में अपने साथ थे, ना दुख सुख भोगने में, न मरने में साथ रहेंगे, जिनका हम साथ समझते हैं। यह अपने नहीं हैं। जिस मकान को हम अपना समझते हैं, वह अपना नहीं है। यहां तक कि यह शरीर भी अपना नहीं।

यह सब परमात्मा की कृपा है।

कबहुंक कर करुणा नर देही। देत ईश बिनु हेतु सनेही।

वह परमात्मा ही हमारा सच्चा पिता है। जब तक हमें उनकी प्राप्ति नहीं होगी, यह जनम मरण का चक्र चलता ही रहेगा।

जब तक जीव को भगवान नहीं मिलते, तब तक यह जीव सुखी नहीं हो सकता।

इस जीव पर दया करके भगवान ने यह हमें मानव का शरीर दिया है। गुरुओं द्वारा सत्संग के द्वारा नित्य अनित्य वस्तु का ज्ञान भी हमें करा दिया है।

इस संसार का सुख अनित्य है, नाशवान है, यह छूट जाने वाला है, इस बात को हम भली भांति जानते हैं। सौ बात की एक बात है। सच्चे माता पिता, सच्चा भाई बंधु, कुटुम्ब भगवान ही हैं।

और जिस दिन वो मिल जाएं। जीव का बेड़ा पार है।

वो परमात्मा कैसे मिलेंगे। इसके लिए गुरु की शरण में जाना चाहिए। और उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए।

सभी संतों का मत है- भगवान की प्राप्ति सेवा, सुमिरन, भजन से होती है। इसलिए हम सब भी भगवान का नाम लें

आज हम सब गुरु पर्व मना रहे हैं। यहां आए हुए सभी भगवद भक्तों को शुभ आशीर्वाद मंगलाशासन!

गुरु: ब्रह्मा गुरु: विष्णु गुरु: देव महेश्वर:

गुरु: साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:

रामचरित मानस में सर्वप्रथम तुलसी दास जी गुरु वन्दना करते हैं

बंदऊं गुरुपद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि

महामोहतम पुंज जासु वचन रवि कर निकर।।

गोस्वामी महाराज कहते हैं, गुरु के चरण कमल समान हैं।

और वचन यानि वाणी सूर्य की किरणों के समान है।

कमल हमेशा सूर्य की किरणों के साथ ही खिलता है। यानि गुरु वे हैं जिनके चरण , उनकी वाणी के साथ चलते हैं। वो जो कहते हैं, वो ही करते हैं।

कमल की तरह चरण होने का अर्थ यह भी है।

गुरु कमल की तरह सभी के साथ रहते हुए भी, सबसे अलग रहते हैं। कमल को छूते समय ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं उसकी

गुरू शरीर के साथ होकर भी शरीर नहीं है, वह आत्मा होकर भी मात्र आत्मा ही नहीं हैं, वह कृपा सागर होते हुए भी स्थिर नहीं हैं, वह धैर्यवान होते हुए भी पत्थर नहीं हैं वह तो सभी परिभाषाओं से ऊपर हैं।

पंखुडियां टूट ना जाएं।
गुरु के आश्रम में रहने वालों को भी यह सावधानी बरतनी चाहिए कि गुरु की मर्यादा न टूट जाए। मर्यादा तब टूटती है जब स्वाथ या लोभ से गुरु के आश्रम में जाया जाता है।
गुरु के सान्निध्य में हमारी बुद्धि और विवेक बढ़ता है।
गुरु समुद्र की तरह होते हैं। वो रत्नों का भंडार होते हैं। बस ध्यान रखने वाली बात यह है कि साधक अथवा शिष्य के पात्र में कोई छेद न हो।
गुरु के एक हाथ में साधक का हाथ और दूसरे में परमात्मा का हाथ होता है। समय आने पर वो दोनों का हाथ मिला देते हैं।
भले ही गुरु परमात्मा से हाथ न मिलाएं। फिर भी शिष्य को अपना हाथ गुरु को थमाए रखना चाहिए। जिसका हाथ गुरु ने थाम लिया, वह निर्भय हो जाता है।
शिष्य को निर्भय कर देना गुरु का प्रमुख लक्षण है।
इतना ही नहीं, गुरु की खोज संसार की सारी खोजों को समाप्त कर देती है।
गुरु को पा लेना ही सबकुछ पा लेना है।
देखिए। हरि को पाना आसान है पर गुरु को पाना बहुत मुश्किल- कबीर जी कहते हैं-
कबिरा वो नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठे तो ठौर है, गुरू रूठे नहीं ठौर।।
रामचरित मानस में गोस्वामी जी ने मंगलाचरण के पहले श्लोक में सरस्वती व गणेश जी का पूजन किया।
मंगलानाम च कर्तारों वन्दे वाणी विनायकौ।
दूसरे में शंकर एवं पार्वती का वन्दन किया
भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ
तीसरे श्लोक में अकेले गुरु का-
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरु शंकर रुपिणम।
गोस्वामी जी कहते हैं, गुरु अद्वितीय होते हैं।
गुरु वे हैं जो भगवान से साक्षात्कार करवाते हैं। उन्हें दिखाते हैं।
इसलिए सभी शास्त्रों ने गुरु महिमा का वर्णन किया है।
इस विषय पर एक प्रसंग आता है।
सती को जब राम मिले तो उनके प्रभु होने पर ही वो संदेह कर बैठी। इस भ्रम के कारण उन्हें भस्म होना पड़ा।
एक बार भगवान शिव अगस्त्य ऋषि से भगवान की कथा सुनकर आ रहे थे। मार्ग में भगवान राम को उन्होंने देखा।
संभु समय तेहि रामहि देखा।
उपजा हियं अति हरषु विशेषा।
सती सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु विशेषी।।
संकरु जगतबंध जगदीशा। सुर नर मुनि सब नावत सीसा।।
अस संशय मन भयऊ अपारा। होई न हृदय प्रबोध प्रचारा।।
सती के मन में संशय उत्पन्न हो गया। भगवान शिव जिनको सब वन्दन करते हैं, जो ईश्वर हैं। वो किन्हें प्रणाम कर रहे हैं।
सती ने यह बात प्रकट नहीं की पर भगवान शंकर उनके मन की बात को समझ गए।
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरजामी सब जानी।।
सुनहुं सती तब नारि सुभाऊ। संसय अस न धरिउ उर काऊ।।
भगवान शिव बोले, हे सती सुनो। तुम्हारा स्त्री स्वभाव है। ऐसा सन्देह मन में कभी नहीं रखना चाहिए।
भगवान शिव बोले,
सोई मम इष्ट देव रघुवीरा।

सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।।
यद्यपि शिवजी ने बहुत बार समझाया फिर भी सती जी के हृदय में उनका उपदेश नहीं बैठा। तब महादेव जी ने मन में भगवान की माया का बल जान मुस्कुराते हुए बोले–
जौ तुम्हारे मन अति संदेहु। तौ किन जाइ परीक्षा लेहु।।
भगवान शिव मन में सोचने लगे, अब सती का कल्याण नहीं। मेरे समझाने से भी संदेह दूर नहीं हुआ, इसका मतलब विधाता ही उल्टे हैं। अब सती का कुशल नहीं।
मोरेहु कहै न संशय जाहीं। विधि विपरीत भलाइ नाहीं।।
भगवान शिव ने सोच लिया
होइह सोहिं जो राम रचि राखा। को कर तर्क बढ़ावै साखा।।
और भगवान शंकर
असि कहि लगै जपन हरिनामा
सती भगवान की परीक्षा लेने पहुंच गई। सती ने सीता का रूप धारण किया और आगे आगे चलने लगी। भगवान राम ने सती जी को पहचान लिया। और मुस्कुराकर बोले।
कहेऊ बहोरि कहां वृषकेतु। बिपिन अकेली फिरहु केहि हेतु।।
भगवान बोले, शिवजी कहां हैं, आप यहां वन में अकेली किस लिए फिर रही हैं।
सतीजी को शर्मिंदगी महसूस हुई और वापिस लौटने लगीं।
तब भगवान शिव बोले–
गई समीप महेश तब, हंसी पृथ्वी कुसलात
लीनहि परीक्षा कवन विधि कहऊं सत्य सब बात
यहां भी सती ने भगवान से झूठ बोल दिया।
कछु न परीक्षा लीन्ह गौसाईं। कीन्ह प्रणाम तुम्हारी नाहिं।।
भगवान शिव ने ध्यान में सब जान लिया। शिव को बहुत विषाद हुआ।
सती कीन्ह सीता कर देखा। सिव उर भयऊ विषाद विशेषा।।
जौ अब करऊं सती सन प्रीता। मिटई भगति प्रभु होई अनीता।।
और भगवान शिव ने विचार किया कि अब सती के इस शरीर से मेरी पति पत्नी रूप में भेंट नहीं हो सकती। और भगवान ने अपने मन में यह संकल्प ले लिया।
संकर सहज सरूप सम्हारा। लागि समाधि अखंड अपारा।।
मेरे कहने का भाव यह है कि जो गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करता है। उनके वचनों पर संसय करता है, उसका कल्याण नहीं होता। गुरु ही हमें सत्य का बोध कराते हैं।
गुरु को, भगवान को सरलता पसंद है।
भगवान को चतुराई पसंद नहीं है। वह शबरी को पसंद करते हैं।
शबरी का भाव ही भक्त का भाव है। शबरी भगवान राम से बोलती हैं–अधम ते अधम अधम अति नारि। तिन्ह महं में मति मंद अघारी।
कह रघुवति सुनु भामिनी बाता। मानऊ एक भगति कर नाता।
भगवान शबरी को भामिनी यानि अपनी प्रेमिका बताते हैं। क्यों। क्योंकि उन्हें शबरी की सरलता प्रिय है। कहते हैं मेरा तेरा भक्ति का नाता है।
भगवान कहते हैं–
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।
मुझे जाति आदि, धन दौलत पसंद नहीं है। मैं इनके आधार पर भेदभाव नहीं करता हूं। बल्कि मुझे तो निर्मल मन वाले लोग ही पसंद हैं।
भगवान कहते हैं–
निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोह कपट छल छिद्र न भावा।।

अपने मन को समझना होगा

आध्यात्मिक होने का अर्थ है कि आप अपने अनुभव के धरातल पर जानते हैं कि मैं स्वयं अपने आनन्द का स्रोत हूं।

जब आप अपनी नश्वरता के बारे में हरदम जागरूक रहने लगते हैं, तब आप अपनी आध्यात्मिक खोज में कभी विचलित नहीं होते।

आध्यात्मिकता कोई ऐसी चीज नहीं है जो आप मंदिर, मस्जिद, या चर्च में करते हैं। यह केवल आपके अंदर ही घटित हो सकती है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति और एक संसारी व्यक्ति, दोनो ही उसी अनन्त-असीम को चाह रहे हैं। एक उसे जागरूक हो कर खोज रहा है जबकि दूसरा अनजाने में। अगर आप अपना व्यक्तित्व मिटा देते हैं तो आपकी मौजूदगी बहुत प्रबल हो जाती है - यही आध्यात्मिक साधना का सार है। यह अपने अंदर तलाशने के बारे में है। आध्यात्मिकता की बातें करना या उसका दिखावा करने से कोई फायदा नहीं है। यह तो खुद के रूपांतरण के लिए है। आध्यात्मिक प्रक्रिया मरे हुए या मर रहे लोगों के लिए नहीं है। यह उनके लिए है जो जीवन के हर आयाम को पूरी जीवंतता के साथ जीना चाहते हैं। आध्यात्मिक प्रक्रिया एक यात्रा की तरह है - निरंतर परिवर्तन। हम राह की हर चीज से प्रेम करना और उसका आनंद लेना सीखते हैं, पर उसे उठाते नहीं। आध्यामिकता मूल रूप से मनुष्य की मुक्ति के लिये है, अपनी चरम क्षमता में खिलने के लिये। यह किसी मत या अवधारणा से अपनी पहचान बनाने के लिये नहीं है। आध्यात्मिकता का अर्थ है कि अपने

विकास की प्रक्रिया को खूब तेज करना। अगर आप अपने ऊपर बाहरी परिस्थितियों का असर नहीं होने देते हैं तो आप स्वाभाविक तौर पर आध्यात्मिक हैं। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने का अर्थ है कि आप मुक्ति की ओर बढ़ रहे हैं, चाहे आपकी पुरानी प्रवृत्तियां, आपका शरीर, और आपके जीन्स कैसे भी हों। अस्तित्व में एकात्मकता व एकरूपता है और हर इंसान अपने आप में अनूठा है। इसे पहचानना और इसका आनन्द लेना ही आध्यात्मिकता का सार है।

अगर आप किसी भी काम में पूरी तन्मयता से डूब जाते हैं, तो आध्यात्मिक प्रक्रिया वहीं शुरू हो जाती है, चाहे वो काम झाड़ू लगाना ही क्यों न हो। सोच-विचार दिमाग की उपज है, यह कोई ज्ञान नहीं है। आध्यात्मिक होने का अर्थ है औसत से ऊपर उठना - यह जीने का सबसे विवेकपूर्ण तरीका है। इसके लिये कई जन्मों तक साधना करनी पड़ती है - ऐसी सोच अधिकतर लोगों में प्रतिबद्धता और एकाग्रता की कमी के कारण बनती है। साधना एक ऐसी विधि है, जिससे पूरी जागरुकता के साथ आध्यात्मिक विकास की गति को तेज किया जा सकता है। आध्यात्मिकता न तो मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है और न ही सामाजिक - यह पूरी तरह अस्तित्व से जुड़ा है। अगर आप किसी भी काम में पूरी तन्मयता से डूब जाते हैं, तो आध्यात्मिक प्रक्रिया वहीं शुरू हो जाती है। किसी चीज को सतही तौर पर जानना सांसारिकता है, और उसी चीज़ को गहराई तक जानना आध्यात्मिकता है। बस इतनी सी बात है।

कलयुग बुरा क्यों है

शादियों में, विवाहों में, उत्सवों में सब जाते ही हैं। उसको भी हम शुभागमन लिखते हैं कि शुभपदार्पण कीजिये, शुभ पैर लाइये। परन्तु असलियत में शुभागमन यही है। आपके शुभागमन पर मेरा शुभ अभिनन्दन इसलिये है कि–

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

आप नर नारायण, लक्ष्मी-नारायण, किस-किस भाव में पधारे हुए हैं, किस-किस रूप में आये हुए हैं, मेरी ओर से सबको अभिवादन! आप हम सब जानते ही हैं कि मानव का शरीर दुर्लभ है। हमारे अन्दर भय घुस गया है, मानव भयभीत हो गये हैं कि यह एक बहुत बुरा युग आ गया है। कलियुग बहुत बुरा है; यह झूठ भी नहीं है, सच्चाई भी है कि कलियुग खराब है क्योंकि कलियुग के अन्दर पवित्रता नहीं है– कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना।।

कलियुग केवल मल और मूल से मलिन है, गन्दा है, पाप का समुद्र है। मनुष्य का मन मछली बन गया है, क्योंकि मछली बिना जल के नहीं रह सकती, मर जाती है तड़प कर के। अब पापमय जो यह कलियुग है, उसमें हमारा मन मछली बन गया है। यह सत्य है। लेकिन भगवान का नाम ही इससे तुम्हें बचा सकता है।

विनम्रता बुद्धिमानी है

एक मूर्ख और एक बुद्धिमान इंसान में यही अंतर है कि बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि वह कितना मूर्ख है, मगर मूर्ख यह नहीं जानता। अपनी मूर्खता को पहचानना बहुत बड़ी बुद्धिमानी है। इस अस्तित्व की किसी भी चीज को – चाहे वह पेड़ हो, घास की एक पत्ती हो, धूल का एक कण हो, एक परमाणु हो – क्या आप इनमें से किसी भी चीज को पूरी तरह जानते हैं? नहीं जानते हैं। जब आपकी बुद्धिमानी

समस्त साधनाओं का लक्ष्य हर परिस्थिति में मन को शांत रखना

और बोध का स्तर यह है, तो दुनिया में आपको कैसे चलना चाहिए? आराम से, थोड़ी विनम्रता और अपने आस-पास की हर चीज के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना के साथ। अगर प्रेम नहीं तो कम से आश्चर्य की भावना होनी चाहिए क्योंकि आप इस दुनिया की किसी भी चीज को नहीं समझते।

अगर आप सिर्फ इस तरह चलना सीख लें, तो आप आध्यात्मिक प्रक्रिया से बचे नहीं रह सकते। आपको किसी सीख या प्रवचन की जरूरत नहीं होगी। आध्यात्मिक प्रक्रिया आपके साथ वैसे भी घटित होगी। यही वजह है कि पूरब की संस्कृतियों में हमेशा आपको हर चीज के सामने सिर झुकाना सिखाया जाता है, चाहे वह कोई चट्टान हो, पशु हो या इंसान हो। जिस धरती पर आप चलते हैं, जिस हवा में सांस लेते हैं, जिस जल को पीते हैं, जिस भोजन को खाते हैं, जिन लोगों के संपर्क में आते हैं और अपने शरीर तथा मन समेत जिन चीजों का इस्तेमाल करते हैं, उनके प्रति सम्मान का भाव रखने से आपको अपनी हर कोशिश में सफलता मिलती है।

जीवन की प्रश्नोत्तरी

भक्ति कैसे प्राप्त हो ?

थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई।
सुनहु तात मति मन चित्त लाई ।।

अर्थात् थोड़े में ही सब समझा देता हूँ। यही विविधता है कि थोड़े में ही ज्यादा समझा देता हूँ – पहले भगवान ने माया वाला सवाल उठाया है क्योंकि पहले माया को जान लेना चाहिए। भगवान कहते हैं कि माया वैसे तो अनिर्वचनीय है लेकिन फिर भी –

मैं अरु मोर तोर तैं माया ।
जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया ।।

मैं, मेरा और तेरा – यही माया है, केवल छह शब्दों में बता दिया।

मैं अर्थात् जब मैं आता है तो मेरा आता है और जहां मेरा होता है वहां तेरा भी होता है – तो ये भेद माया के कारण होता है। जैसे चाचा जी घर में सेब लाये तो अपने बेटे को दो सेब दे दिए और बड़े भाई का बेटा आया तो उसे एक सेब दे दिया। कारण कि ये मेरा बेटा है और वो बड़े भाई का बेटा है। बस मेरा और तेरा – और ज्यादा विस्तार में जाने की आवश्यकता ही नहीं है, यह भेद माया के कारण ही होता है। उस माया के भी दो भेद बताये हैं – एक विद्या और दूसरी अविद्या

एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा ।
जा बस जीव परा भवकूपा ।।
एक रचइ जग गुन बस जाकें ।
प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें ।।

अपनी गलती के लिए माफी मांगना और सामने वाले का उसे माफ कर देना इंसानियत का श्रेष्ठ गुण है।

अविद्या रूपी माया जीव को जन्म-मरण के चक्कर में फंसाती है,जीव भटकता रहता है जीव जन्म अथवा मृत्यु के चक्कर में। और दूसरी विद्या रूपी माया मुक्त करवाती है।

ज्ञान किसको कहते हैं ?

हम ज्ञानी किसे कहेंगे ? जो बहुत प्रकांड पंडित हो, शास्त्रों को जानता हो, बड़ा ही अच्छा प्रवचन कर सकता हो, दृष्टांत के साथ सिद्धांत को समझाये, संस्कृत तथा अन्य बहुत सी भाषाओं का जिसे ज्ञान हो - ज्ञानी।

पंडित और ज्ञानी में अन्तर है, उसे पंडित कह सकते हैं लेकिन ज्ञानी नहीं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बड़ी अद्भुत व्याख्या की है ज्ञानी की -यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं।।

ज्ञानी उसको कहते हैं - जहाँ मान न हो अर्थात् जो मान-अपमान के द्वन्द्व से रहित हो और सबमें ही जो ब्रह्म को देखे । ज्ञान के द्वारा तो ईश्वर की सर्वव्यापकता का अनुभव हो जाता है तो सबमें भगवान को देखने लग जाता है।

वैरागी किसको कहेंगे ?

हमारी परिभाषा यह है कि भगवें कपड़े पहने हो या फिर संसार छोड़ कर भाग गया हो, सिर पर जटायें हो, माथे पर तिलक हो, हाथ में माला लिए हुए हो - वैरागी। भगवान श्री राम कहते हैं - कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी।। परम वैरागी वह है, जिसने सिद्धियों को तृन अर्थात् तिनके के समान तुच्छ समझा। कहने का तात्पर्य है कि जो सिद्धियों के चक्कर में नहीं फंसता और तीनि गुन त्यागी अर्थात् तीन गुण प्रकृति का रूप यह शरीर है - उससे जो ऊपर उठा अर्थात् शरीर में भी जिसकी आसक्ति नहीं रही - वही परम वैरागी है।

जीव और ईश्वर में भेद क्या है।

माया ईस न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव ।

बंध मोच्छ प्रद सर्बपर माया प्रेरक सीव ।।

अर्थात् जो माया को, ईश्वर को और स्वयं को नहीं जानता - वह जीव और जीव को उसके कर्मानुसार बंधन तथा मोक्ष देने वाला - ईश्वर।

"जिनके पास जाने से हमारे मन में मच रही हलचल शान्त होती हो, बिना पूछे शंकाओं का समाधान होता हो, मन में सन्तोष होता हो, अपने में दैवी सम्पदा के गुण आते हों अर्थात् दया, क्षमा, उदारता, त्याग, सन्तोष, नीति, धर्म आदि की वृद्धि होती हो, दुर्गुण-दुराचार दीखने लगें और घटने लगें। ऐसे परम महापुरुष व संत अमूल्य होते हैं।"

अध्यात्म और संगीत का संगम

अध्यात्म ने संगीत को काफी महत्व दिया है। दुनिया में थोड़े लोग हैं, जो हृदय के संगीत पर थिरकते हैं। संसारी लोग तभी नाचते हैं, जब उन्हें बाहर का संगीत मिलता है। ध्यान की गहराई का पैमाना है संगीत। दोनों में कोई बुनियादी फर्क नहीं है। तन्मयता दोनों का स्वभाव है। जिसने स्वरों के बीच प्रवाहित अभंग लयबद्धता का अनुभव कर लिया वह ब्रह्मभाव में प्रतिष्ठित हो गया। हम तो संसारी स्वरों की बेतरतीब खनखनाहट सुनते हैं, उनके मध्य चल रहा समस्वर का संगीत नहीं। जैसे विविध वाद्ययंत्रों की विशिष्ट स्वर लहरियों में 'एकतान संगीत' समाया हुआ है वैसे ही ब्रह्मांड के विविध घटकों में कृष्ण की बांसुरी बज रही है।

जब व्यक्ति शरीर, मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहता है तब उसे स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा का लाभ मिलना शुरू हो जाता है।

ऐसा प्रश्न करना नासमझी है कि संगीत कहां नहीं है? हवा की सरसराहट में, वन की मरमराहट में, नदी की कलकल में, चिड़ियों की चहक में, सितारों की चमक में, फूलों की महक में, भ्रमर के गुंजार में, झींगुर की झंकार में और रात के सन्नाटे में निरंतर संगीत चल रहा है। हृदय से जुड़ो तो आपको भी सुनाई देगा। अध्यात्म ने संगीत को काफी महत्व दिया है, लेकिन आधुनिक संगीत मात्र मनोरंजन का माध्यम बन गया है। आज संगीत भी कारोबार बन चुका है। इन दिनों हमारे भीतर उपद्रव बहुत है। हम बाजार की सड़क बन गए हैं, जहां केवल

शोरगुल है। इस अराजक परिवेश में महासंगीत कैसे सुनाई देगा? इसे सुनने के लिए स्थिर मन चाहिए। संगीत की 'ट्यूनिंग' शांत चित्त में होती है। बाजारू विचार की मक्खियां जब तक भीतर भिनभिना रही हैं तब तक महासंगीत सुनाई नहीं देगा। दुनिया में थोड़े लोग हैं, जो हृदय के संगीत पर थिरकते हैं। संसारी लोग तभी नाचते हैं, जब उन्हें बाहर का संगीत मिलता है। आज 'पॉप म्यूजिक' प्रचलन में है। जब तक संगीतज्ञ ध्यान की गहराई में नहीं उतरता तब तक वह श्रोताओं का अंतर्मन नहीं छू पाता। विशुद्ध प्रेम दीवानी मीरा और चैतन्य का नर्तन भले ही टेक्निकल न हो, फिर भी उनके अंतस की गहराई में संगीत घटा है। संगीत के महत्व से इंकार नहीं किया जा सकता। कहने का आशय है कि संगीत वही है, जो आपके अंतस और मन को छू ले। भारतीय शास्त्रीय संगीत अंतस को स्पंदित कर देता है, लेकिन इसे विडंबना ही कहेंगे कि आज लोग भारतीय संगीत की तुलना में पाश्चात्य संगीत से कहीं ज्यादा प्रभावित हैं।

।। श्री गुरूहरिः ।।

श्री सिद्धदाता आश्रम

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

प्रांगण में जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

निःशुल्क विशाल चिकित्सा शिविर

प्रत्येक रविवार प्रातः नौ बजे से

उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों एवं उनके सहयोगियों द्वारा आयुर्वेद, अंग्रेजी, होम्योपेथी व प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को बेहतर और निशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं।

वैकुंठवासी गुरू महाराज की कृपा एवं अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से शिविर अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रहे हैं। अब तक लाखों जरूरतमंद इसका लाभ उठा चुके हैं और सैकड़ों मरीज प्रतिदिन अपना इलाज कराकर लाभांवित हो रहे हैं।

प्रयास बिना कुछ संभव नहीं

मनुष्य के अंत करण में बुरे विचारों का जंजालरूपी जंगल उसकी जीवनलीला को उसी प्रकार समाप्त कर देता है, जैसे भयानक जंगल में जंगली जानवर अपने शिकार को खा जाते हैं।

अक्सर बुरे विचारों में घिरकर मनुष्य असहाय होकर अवसाद की स्थिति में पहुंचकर आत्महत्या जैसा पाप कर बैठता है। इन बुरे विचारों के जंगल में कुसंगति कटीली झाड़ियों और ऊबड़ खाबड़ रास्ते की तरह ही है, जो इस स्थिति को और भयावह और मुश्किल बना देती है। विचारों के इस बुरे जंगल से निजात पाने के लिए मनुष्य को धर्म का सहारा लेना चाहिए। भगवान ने राम और कृष्ण रूप में पूरी मानव जाति को विश्वास दिलाते हुए कहा है कि जब-जब संसार में धर्म की हानि होगी और अधर्म बढ़ेगा, तब-तब वे इस पृथ्वी पर अवतार लेंगे और अधर्म को समाप्त करेंगे। पृथ्वी पर हर प्राणी का जीवनरूपी संसार व्यक्तिगत होता है और इसके इस संसार में ईश्वर तब ही अवतार लेते हैं जब वह उन्हें पुकारता है, परंतु अक्सर देखने में आया है कि अप्राकृतिक जीवनशैली में फंसकर मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है। वह स्वयं इसका नियंता बनकर सम स्थिति से दूर जाकर कभी-कभी आत्महत्या जैसा विकल्प चुन लेता है। इस जीवनरूपी संसार को सफलतापूर्वक पार करने के लिए प्राकृतिक जीवनशैली और जीवन को धर्म के अनुसार नियंत्रित करने के लिए एक सच्चे मार्गदर्शक रूपी गुरु की शरण भी लेनी चाहिए। यह गुरु माता पिता या और कोई सच्चा हितैषी हो सकता है।

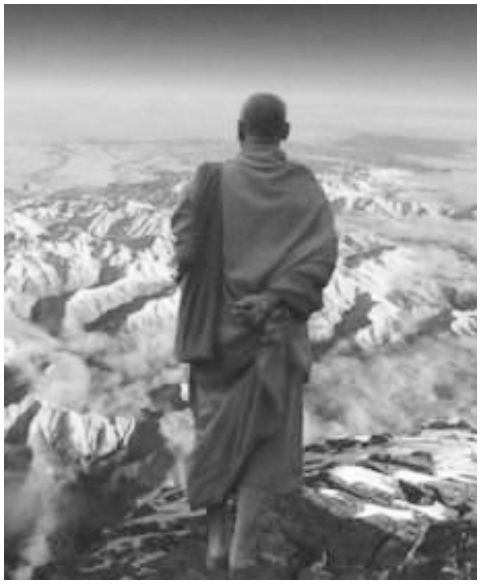

बुरे विचारों में घिरकर मनुष्य अवसाद की स्थिति में पहुंचकर आत्महत्या जैसा पाप कर बैठता है।

संसार का आकर्षण बंधन है

हमारा मन इतना चंचल है कि हम कहीं भी भागकर जाएं वह फिर-फिर उसी पदार्थ के चिंतन में लगा रहता है, जिसके चलते हमने संसार का त्याग किया है।

सभी गुरुओं ने मन को वश में करने का उपदेश दिया। इसलिए माना जाता है कि संसार में रहकर भी आप संन्यासी हो सकते हैं।

संसार के आकर्षण से बंधे रहने के कारण व्यक्ति संसारी माना जाता है। इसके आकर्षण से मुक्त हो जाने वाला ही संन्यासी है। वह रहेगा संसार में ही, किंतु कमलवत। कमल जल में रहकर भी जल से संपृक्त नहीं होता। यही हाल है संन्यासी का। वह जंगलों में जाए या संसार से दूर रहने लगे, किंतु वहां भी वह घर, परिवार, कार्य-व्यापार का ही चिंतन करता रहे तो उसे संन्यासी नहीं माना जाएगा। क्योंकि अब भी उसके मन में तृष्णा बाकी है।

मन को वश में करके दुनिया के सभी प्रलोभनों से यदि आप मुक्त हो जाते हैं तो संन्यासी बनने का मार्ग सहज ढंग से खुल जाता है।

संन्यासी का मन यदि पूर्णरूपेण विरक्त हो जाए तो वह वन में रहे अथवा परिवार में, वह सचमुच संन्यासी बन सकेगा। संसार में रहने वाले व्यक्ति को माया, मोह, वासना और लोभ आदि नकारात्मक प्रवृत्तियां सताती रहेंगी। वह संन्यासी बनने का कितना भी प्रयास करे, लेकिन उसमें कभी सफल नहीं

हो सकेगा। चार आर्य सत्य हैं। आर्य का अर्थ यहां श्रेष्ठ से है। इन चार आर्य सत्यों का अनुभव हमें संसार में रहकर ही होता है। ये हैं-दुख है, दुख का कारण है, कारण से मुक्त होने का उपाय है और चौथा है कि निदान हो गया तो सुख मिल गया। यह वास्तव में निर्वाण की अवस्था है। पुनर्जन्म से मुक्त हो जाना है। हालांकि निर्वाण या मोक्ष संन्यास नहीं है, लेकिन इस मोक्ष के द्वारा आप समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त तो हो ही जाते हैं। यह संन्यास का सबसे उत्कृष्ट रूप है। हमारा मन इतना चंचल है कि हम कहीं भी भागकर जाएं वह फिर-फिर उसी पदार्थ के चिंतन में लगा रहता है, जिसके चलते हमने संसार का त्याग किया है।

अब तक दुनिया में जितने भी सद्गुरु हुए और हैं, सबने इसी मन के जीतने और वश में करने की बात कही है। चाहे वह कृष्ण हों, बुद्ध हों, क्राइस्ट हों या नानक, कबीर। मनुष्य संसार के सभी व्यक्तियों की संपदा पर अधिकार कर ले, किंतु जब भी हारता है तो अपने मन से हारता है। यही मन हमें संसार से जोड़ता है। यही मन हमें संन्यास से जोड़ता है। यही मन सुख-दुख का अनुभव कराता है। इसीलिए सभी गुरुओं ने मन को वश में करने का उपदेश दिया। इसलिए माना जाता है कि संसार में रहकर भी आप संन्यासी हो सकते हैं, लेकिन शर्त यही है कि फिर कमलवत हो जाएं। मन और इंद्रियों के वश में न रहें। मन को वश में करके दुनिया के सभी प्रलोभनों से यदि आप मुक्त हो जाते हैं तो संन्यासी बनने का मार्ग सहज ढंग से खुल जाता है।

MORE THAN 3 LAKH LIKES

श्री सिद्धदाता आश्रम फेसबुक पर भी

श्री सिद्धदाता आश्रम में आयोजित होने वाले पर्वों एवं क्रियाकलापों की जानकारी फेसबुक पर पाने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जाकर लाइक करें।

www.facebook/shrisidhdataashram

Shri Sidhdata Ashram is now on Facebook.

You can watch photographs of latest events, weekly message from Shri Guruji ans get regulat updates from Ashram on your facebook account.

To receive updates on your Facebook account visit Ashram's FB page

www.facebook.com/shrisidhsataashram

and click on Like

also do visit our website www. shrisda.org to watch latest News, Updates, Photographs and to download Books, Monthly Magazine and Wallpapers.

सांस अंतिम क्षण तक साथ निभाती है

अपने शरीर या मन को खुद से दूर रखते हुए संचालित कर सकते हैं, तो आपकी सभी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। योग में ध्यान को सांसों पर केंद्रित करने को कहा जाता है। मन व भावनाओं को एक खूंटी की जरूरत होती है, जिस पर वे खुद को टांग सकें। आप किसी के प्रेम में क्यों पड़ते हैं? क्योंकि आप किसी के ऊपर अपनी भावनाओं और मन को टांगना चाहते हैं। आपकी भावनाओं को एक ही फोकस की जरूरत होती है। अगर उसी के साथ रहते हैं, तो आप ज्यादा सहज रहते हैं। सांस अंतिम क्षण तक साथ निभाती है, इसलिए आप उसके साथ बिल्कुल सहज और निश्चिंत होंगे। धन-दौलत या आपका परिवार, कोई भी आपकी सांस जितनी भरोसेमंद नहीं है। इसलिए बेहतर है कि आप अपना मन उसी पर लगाएं। जो चीज आपको आपके शरीर से जोड़ कर रखती है, वह है आपकी सांस। कूर्म नाड़ी उस डोर की तरह होती है, जो आपको अपने शरीर के साथ बांधे रखती है। जब आप ध्यान के साथ सांस के अंदर तक जाएंगे, तो आप समझ जाएंगे कि आप अपने शरीर के साथ बंधे हुए हैं। एक बार यह जानने के बाद, आप अपने शरीर को एक दूरी पर रख सकते हैं। फिर आपकी सभी समस्याएं खत्म हो जाएंगी, क्योंकि आप जीवन की परेशानियों से दूरी बना सकेंगे। शरीर और मन ही परेशानी का सबब है। अगर आप अपने शरीर या मन को खुद से दूर रखते हुए संचालित कर सकते हैं, तो सभी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी।

धन-दौलत या आपका परिवार, कोई भी आपकी सांस जितनी भरोसेमंद नहीं है।

राजस्थान का भानगढ़ किला

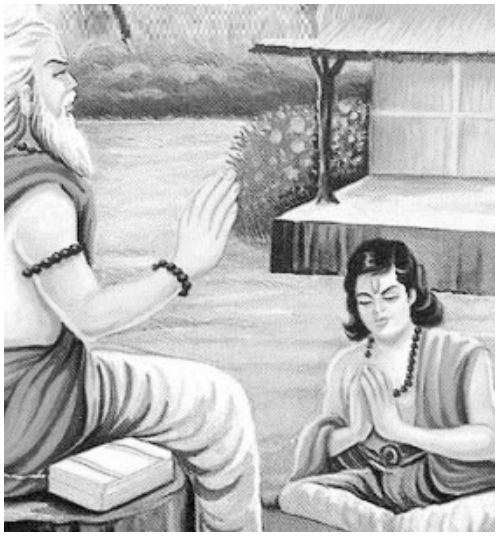

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है। बड़ी मुश्किल से होता है, चमन में दीदावर पैदा।।

भगवान की दिव्य आज्ञाओं को जन जन में जागृत करने वाले संत महापुरूषों के कारण ही भारतवर्ष आध्यात्मिक की

(भानगढ़ का किला भूतों के भानगढ़ के नाम से भी मशहूर है।)

लेख - डीसी तंवर

दृष्टि से विश्व में सर्वोपरि है। वैकुण्ठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज भी ऐसी ही संत विभूति थे। वह बड़े ही सौम्य, सरल, दयामूर्ति, कैंकर्य-निष्ठ, सेवा परायण महापुरूष थे। उनका पूर्ण बखान करना लेखनी की सीमा रेखा से बाहर की बात है। उनके दिव्य तपोमय जीवन का ही परिणाम है कि यहां सिद्धदाता आश्रम में भूखे को भोजन का प्रबन्ध होता है, बांझ को पुत्र और बेरोजगारों को रोजगार स्वत: मिलता है।

स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज उनका जन्म राजस्थान के गांव पाड़ला, तहसील रोड भीम-जिला करौली के एक सम्पन्न कृषक ब्राह्मण परिवार में हुआ। वह बचपन से ही धार्मिक प्रवृति के थे। उन्होंने बाला जी मेंहदीपुर के सुप्रसिद्ध मंदिर के महंत बाबा गणेशपुरी जी के सान्निध्य में रहते हुए, मानव कल्याण हेतु संकल्प ले लिया।

शिक्षा-दीक्षा

उन्होंने शिक्षा-दीक्षा वृन्दावन और काशी में प्राप्त करते हुए वेद पुराण, दर्शन-शास्त्र आदि का गहन अध्ययन किया एवं धर्म के मर्म को जाना। अपने

परम पूज्य श्री गुरु महाराज ही के आदेश और बाबा गणेशपुरी जी से प्राप्त प्रेरणा से भानगढ़ के धने एवं भीषण जंगल में, वर्षों कठोर तपस्या की। उन्होंने मंत्रों की शक्तियों का साकार अनुभव किया और उन्हें सिद्ध भी किया।

पहाड़। नदियां। किले

भारतवर्ष में घूमने-फिरने के लिए एक से एक बढ़कर अनेक स्थान हैं। देश से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी भारत में घूमने के लिए प्रतिवर्ष बड़ी तादाद में पर्यटक आते रहते हैं। यहां पर खूबसूरत पहाड़ नदियां और झीलों के अलावा ऐतिहासिक एवं प्राचीन इमारतें भी हैं, जो पर्यटकों के लिए खास आकर्षण बने हुए हैं।

किला भानगढ़

यहां पर कुछ ऐसे किले भी हैं, जो प्राचीन एवं खूबसूरत होने के साथ-साथ, भूत प्रेतों के लिए भी जाने जाते हैं। आज हम जिस किले की बात कर रहे हैं, वह जिला अलवर राजस्थान में स्थित है। इस किले का नाम भानगढ़ है और यह किला ''भूतों का भानगढ़'' नाम से मशहूर है।

सरकार ने इसकी प्रचलित कहानियों के कारण, रात को यहां रूकने पर प्रतिबंध लगा रखा है। ऐसा कहा जाता है, कि यहां रात को रूकने से जान को खतरा भी हो सकता है। आइये जानें इसके बारे में कुछ दिलचस्प बातें।

राजस्थान के अलवर जिले में स्थित भानगढ का किला, राजा भगवंत दास ने वर्ष 1573 में बनवाया था। बाद में उनके छोटे भाई ने इसे अपनी राजधानी बना लिया। यह किला तीन ओर से अरावली की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। श्रावण मास के दिनों में यहां बहुत हरियाली देखने को मिलती है। इसके अलावा यहां पर बहुत पुराने और भव्य मंदिर भी बने हुए हैं।

तांत्रिक सिंधु सेवड़ा का श्राप

ऐसा कहा जाता है कि यहां की राजकुमारी रत्नावती बहुत सुंदर थी, जिसे तांत्रिक अपने वश में करना चाहता था। परन्तु वो खुद ही इसका शिकार होकर मर गया। कुछ समय पश्चात, दूसरे देश के साथ युद्ध में भानगढ़ के सारे लोग मारे गए और किला वीरान हो गया। ऐसा माना जाता है कि उन सभी मरे हुए व्यक्तियों की आत्माएं अभी भी इस किले में भटकती हैं। और कुछ लोग उन आत्माओं को रात के अंधेरे में महसूस भी कर चुके हैं।

मंदिर

भानगढ़ का पूरा किला वीरान हो चुका है, लेकिन यहां के मंदिर अभी भी वैसे के वैसे ही हैं।

यहां पर भगवान सोमेश्वर गोपीनाथ मंगलादेवी और केशव राय के मंदिर बने हुए हैं लेकिन यहां के सारे मंदिरों से मूर्तियां गायब हो चुकी हैं। केवल सोमेश्वर महादेव के मंदिर में शिवलिंग मौजूद हैं। क्रमशः

करना चाहते हो तो दुखियों की सहायता करो। छोड़ना चाहते हो तो बुरी आदतों को छोड़ो।

तुलसी से दूर करें वास्तुदोष

हाथी कर्मठ और बुद्धिमान प्राणी है। हाथी अपने परिवार के लिए कर्म करके भोजन अर्जित करता है। हाथी समूह में रहकर एकता बनाए रखता है तथा पारिवारिक धर्म का निर्वाह करता है। लक्ष्मी जी जब श्वेत हाथी पर सवार होती हैं, तब वह धर्म लक्ष्मी

घर या दफ्तर के मुख्य द्वार पर सूंड ऊपर को किए हाथियों के जोड़े की प्रतिमा रखें। इससे परिवार में सौभाग्य तथा मजबूती आती है।

कहलाती हैं। कई पूर्वी संस्कृतियों में हाथी को एक पवित्र पशु माना जाता है। वह सामर्थ्य, शक्ति, लम्बी आयु, बुद्धिमत्ता, निष्ठा, प्रतिष्ठा, ज्ञान का प्रतीक है। घर या दफ्तर के मुख्य द्वार पर सूंड ऊपर को किए हाथियों के जोड़े की प्रतिमा रखें। इससे परिवार में सौभाग्य तथा मजबूती आती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर की तिजोरी के पल्ले पर बैठी हुई लक्ष्मीजी की तस्वीर जिसमें दो हाथी सूंड उठाए नजर आते हैं, लगाना बड़ा शुभ होता है। तिजोरी वाले कमरे का रंग क्रीम या ऑफ व्हाइट रखना चाहिए। राहू ग्रह अपना वर्चस्व जिस व्यक्ति पर रखते हैं उसे रंक से राजा और राजा से रंक बना सकते हैं। जब राहू किसी व्यक्ति पर मेहरबान होता है तो व्यक्ति रातों-रात कुबेर बन जाता है। ऋण मुक्ति से बचने के लिए हाथी के नीचे से गुजरें। सांसारिक समस्याओं से मुक्ति के लिए हाथी की 6 उल्टी परिक्रमा करें। आर्थिक संकटों से बचने के लिए हाथी के पांव की मिट्टी कुएं में डालें। खुशहाल पारिवारिक जीवन के लिए 44 ग्राम चांदी से बना हाथी घर की दक्षिण पश्चिम दिशा में स्थापित करें। दुश्मनों पर जीत हासिल करने के लिए हाथी के महावत को शनिवार की शाम अंकुश भेंट करें।

पंचकर्म के फायदे

आयुर्वेद के अनुसार पंचकर्मा थेरेपी से शरीर में मौजूद टाक्सिन निकल जाते हैं।

पंचकर्मा थेरेपी से हमारे शरीर को टाक्सिन से आराम मिलता है। पंचकर्मा का पहला चरण है ओलेशन। इससे शरीर को हर्बल आयल और औषधीय आयल से सैचुरेट किया जाता है।

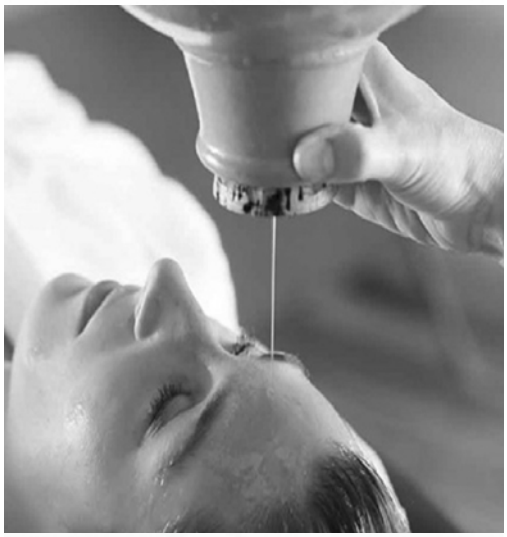

टाक्सिन में शहद जैसे ही गुण होते हैं और यह पंचकर्मा थेरेपी से शरीर से आसानी से निकल कर शरीर को आराम पहुंचाता है।

घी या औषधीय तेल से अभ्यांतर स्नेहाना या आंतरिक ओलेशन की मदद से गहरे टिश्यु से टाक्सिन को शरीर के गैस्ट्रो इन्टेस्टाइनल भाग में पंहुचाया जाता है और फिर पंचकर्मा थेरेपी से इसे निकाल दिया जाता है। बाह्य रूप से तेल लगाने की प्रक्रिया को अभ्यांग कहते हैं। इसमें पूरे शरीर में औषधीय तेल से तेज़ी से मसाज करना होता है। किस प्रकार का तेल लेना है यह आप पर निर्भर करता है। पंचकर्म थेरेपी की अनुरूपता को समझने का सबसे आसान तरीका है। मान लीजिए कि आपने एक कटोरी में तेल लगाने के बाद उसमें शहद डाल दिया। ऐसे में शहद फिसलने की वजह से कटोरी से नहीं चिपकेगा। टाक्सिन में शहद जैसे ही गुण होते हैं और यह पंचकर्मा थेरेपी से शरीर से आसानी से निकल कर शरीर को आराम पहुंचाता है। आयुर्वेद क्लीनिशियन यह निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति को किस प्रकार की प्रक्रिया करनी चाहिए। डीटाक्सिफिकेशन प्रक्रिया के बाद डाक्टर हर्बल रेमेडीज़ के इस्तेमाल से शरीर की प्रक्रियाओं को संतुलित करने की कोशिश करता है।

संसारिक मोह माया के जाल में नहीं फंसना

भगवान शिव ने देवी पार्वती को समय-समय पर कई ज्ञान की बातें बताई हैं। जिनमें मनुष्य के सामाजिक जीवन से लेकर पारिवारिक और वैवाहिक जीवन की बातें शामिल हैं। भगवान शिव ने देवी पार्वती को 5 ऐसी बातें बताई थीं जो हर मनुष्य के लिए उपयोगी हैं, जिन्हें जानकर उनका पालन हर किसी को करना ही चाहिए-

किसी भी मनुष्य को मन, वाणी और कर्मों से पाप करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

क्या है सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ा पाप : देवी पार्वती के पूछने पर भगवान शिव ने उन्हें मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा धर्म और अधर्म मानी जाने वाली बात के बारे में बताया है। भगवान शंकर कहते हैं-

श्लोक- नास्ति सत्यात् परो नानृतात् पातकं परम।।

अर्थात- मनुष्य के लिए सबसे बड़ा धर्म है सत्य बोलना या सत्य का साथ देना और सबसे बड़ा अधर्म है असत्य बोलना या उसका साथ देना।

इसलिए हर किसी को अपने मन, अपनी बातें और अपने कामों से हमेशा उन्हीं को शामिल करना चाहिए, जिनमें सच्चाई हो, क्योंकि इससे बड़ा कोई धर्म है ही नहीं। असत्य कहना या किसी भी तरह से झूठ का साथ देना मनुष्य की बर्बादी का कारण बन सकता है।

श्लोक- आत्मसाक्षी भवेन्नित्यमात्मनुस्तु शुभाशुभे।

अर्थात- मनुष्य को अपने हर काम का साक्षी यानी गवाह खुद ही बनना चाहिए, चाहे फिर वह अच्छा काम करे या बुरा। उसे कभी भी ये नहीं सोचना चाहिए कि उसके कर्मों को कोई नहीं देख रहा है।

कई लोगों के मन में गलत काम करते समय यही भाव मन में होता है कि उन्हें कोई नहीं देख रहा और इसी वजह से वे बिना किसी भी डर के पाप कर्म करते जाते हैं, लेकिन सच्चाई कुछ और ही होती है। मनुष्य अपने सभी कर्मों का साक्षी खुद ही होता है। अगर मनुष्य हमेशा यह एक भाव मन में रखेगा तो वह कोई भी पाप कर्म करने से खुद ही खुद को रोक लेगा।

श्लोक-मनसा कर्मणा वाचा न च काङ्क्षेत पातकम।

अर्थात- आगे भगवान शिव कहते है कि- किसी भी मनुष्य को मन, वाणी और कर्मों से पाप करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि मनुष्य जैसा काम करता है, उसे वैसा फल भोगना ही पड़ता है। यानि मनुष्य को अपने मन में ऐसी कोई बात नहीं आने देना चाहिए, जो धर्म-ग्रंथों के अनुसार पाप मानी जाए। न अपने मुंह से कोई ऐसी बात निकालनी चाहिए और न ही ऐसा कोई काम करना चाहिए, जिससे दूसरों को कोई परेशानी या दुख पहुंचे। पाप कर्म करने से मनुष्य को न सिर्फ जीवित होते हुए इसके परिणाम भोगना पड़ते हैं बल्कि मारने के बाद नरक में भी यातनाएं झेलना पड़ती हैं।

संसार में हर मनुष्य को किसी न किसी मनुष्य, वस्तु या परिस्थित से आसक्ति यानि लगाव होता ही है। लगाव और मोह का ऐसा जाल होता है, जिससे छूट पाना बहुत ही मुश्किल होता है। इससे छुटकारा पाए बिना मनुष्य की सफलता मुमकिन नहीं होती, इसलिए भगवान शिव ने इससे बचने का एक उपाय बताया है।

श्लोक-दोषदर्शी भवेत्तत्र यत्र स्नेह: प्रवर्तते। अनिष्टेनान्वितं पश्चेद् यथा क्षिप्रं विरज्यते।।

अर्थात- भगवान शिव कहते हैं कि- मनुष्य को जिस भी व्यक्ति या परिस्थित से लगाव हो रहा हो, जो कि उसकी सफलता में रुकावट बन रही हो, मनुष्य को उसमें दोष ढूंढ़ना शुरू कर देना चाहिए। सोचना चाहिए कि यह कुछ पल का लगाव हमारी सफलता का बाधक बन रहा है। ऐसा करने से धीरे-धीरे मनुष्य लगाव और मोह के जाल से छूट जाएगा और अपने सभी कामों में सफलता पाने लगेगा।

यह एक बात समझ लेंगे तो नहीं करना पड़ेगा दुखों का सामना

श्लोक-नास्ति तृष्णासमं दु:खं नास्ति त्यागसमं सुखम्।

सर्वान् कामान् परित्यज्य ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

अर्थात- आगे भगवान शिव मनुष्यो को एक चेतावनी देते हुए कहते हैं कि- मनुष्य की तृष्णा यानि इच्छाओं से बड़ा कोई दु:ख नहीं होता और इन्हें छोड़ देने से बड़ा कोई सुख नहीं है। मनुष्य का अपने मन पर वश नहीं होता। हर किसी के मन में कई अनावश्यक इच्छाएं होती हैं और यही इच्छाएं मनुष्य के दु:खों का कारण बनती हैं। जरुरी है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझे और फिर अनावश्यक इच्छाओं का त्याग करके शांत मन से जीवन बिताएं।

बोलना चाहते हो तो सत्य और मीठे वचन बोलो।

।। श्री गुरूहरिः ।।

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज की कृपा से स्थापित व प्रकाशित एवं अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में प्रकाशित मासिक पत्रिका श्री सुदर्शन संदेश के प्रचार प्रसार के लिए प्रण लें। - संपादक

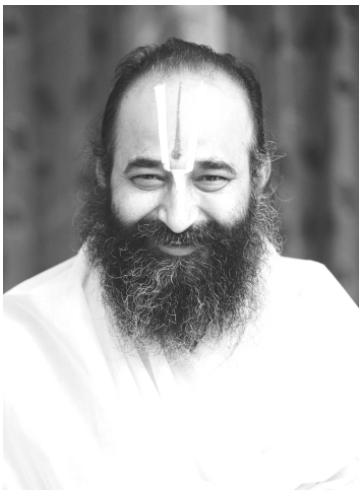

आपको क्या होगा लाभ!

पहले यह जान लें कि पत्रिका की सदस्यता एवं प्रचार प्रसार के मायने क्या हैं वास्तव में ''गुरुवचनों का प्रचार'' अर्थात् गुरू की ही सेवा है। गुरू महाराज के वचनों के अनुसार शास्त्र कहते हैं– जो शिष्य गुरु के वचनों का प्रचार प्रसार करता है, उनको अंगीकार करता है वास्तव में वह गुरू की सीधी कृपा का पात्र बनता है।

गुरू के वचनों को पढ़ने पढ़ाने से आपको अपने जीवन का सही अर्थ पता चलेगा। आपको निरंतर सत्संग मिलेगा। आपको सही और गलत में अंतर करने की बुद्धि मिलेगी। आप अपने धार्मिक कर्म, पर्व, त्यौहार, पित्रों को प्रसन्न करने, घर परिवार में कैसे रहें आदि आदि जानकारियों को समझ सकेंगे। इसके साथ ही आप गुरू वचनों को हृदय में धारण करेंगे।

आपसे प्रार्थना है कि श्री सुदर्शन संदेश पत्रिका के सदस्य बनें व बनाएं। श्री गुरू महाराज की कृपाओं को प्राप्त करें।

भगवान राम शबरी के राम

एक ऋषि तपस्या में लीन थे। जब उन्होंने शबरी को जल लेते देखा तो उसे अछूत कहकर उस पर एक पत्थर फेंक कर मारा और उसकी चोट से बहते रक्त की एक बूंद से तालाब का सारा पानी रक्त में बदल गया। राम ऋषि से पूछते हैं – हे ऋषिवर मुझे इस तालाब का इतिहास बतायें।

यह बेर जूठे नहीं सबसे मीठे हैं, क्यूंकि इनमे प्रेम हैं और राम बहुत प्रेम से उन बेरों को खाते हैं।

तब ऋषि ने कहा हे भगवान यह जल उसी शुद्र शबरी के कारण अपवित्र हुआ है। तब भगवान राम ने दुखी होकर कहा – हे गुरुवर, यह रक्त उस देवी शबरी का नहीं मेरे ह्रदय का है, जिसे तुमने अपने अपशब्दों से घायल किया है। राम का नाम सुनते ही शबरी दौड़ी चली आती हैं। राम मेरे प्रभु कहती हुई जब वो तालाब के समीप पहुँचती है तब उसके पैर की धूल तालाब में चली जाती है और तालाब का सारा रक्त जल में बदल जाता है। तब भगवान राम कहते हैं – देखिये गुरुवर आपके कहने पर मैंने सब किया लेकिन यह रक्त, भक्त शबरी के पैरों की धूल से जल में बदल गया। वो पूरे उत्साह के साथ अपने प्रभु राम का स्वागत करती हैं और बड़े प्रेम से उन्हें अपने जूठे बेर परोसती हैं। भगवान राम भी बहुत प्रेम से उसे खाने उठाते हैं, तब उनके साथ गये लक्ष्मण उन्हें रोककर कहते हैं – भ्राता ये बेर जूठे हैं। तब राम कहते हैं – लक्ष्मण यह बेर जूठे नहीं सबसे मीठे हैं, क्यूंकि इनमें प्रेम है और वे बहुत प्रेम से उन बेरों को खाते हैं। मतंग ऋषि का कथन सत्य होता है और देवी शबरी को मोक्ष की प्राप्ति होती है। और इस तरह भगवान राम, शबरी के राम कहलाये।

भ्रम से निवृत्ति

मनुष्य अप्राप्त जगत को प्राप्त मानकर लोभ, मोह, काम, क्रोध, नीरसता, अभाव और मृत्यु का कष्ट भोगता है। और नित्य-प्राप्त परमात्मा को अपने से दूर मानकर अनाथपन से पीड़ित रहता है। मनुष्य के इस भ्रम की निवृत्ति किसी विधि, विधान, अनुष्ठान आदि से नहीं होती है।

शरीर और संसार को अपना मत मानो। अपने लिए मत मानो तो इसकी आसक्ति मिट जाएगी

क्रिया-शक्ति, विचार-शक्ति और भाव-शक्ति के सदुपयोग से सर्वोच्च जीवन मिलता है। अगर हमें अपने साध्य की विस्मृति न हो और हमारे जीवन में साधक-भाव सजग बना रहे तो विवेक का आदर स्वाभाविक हो जाएगा। साध्य की विस्मृति क्यों होती है? क्योंकि मनुष्य सुख, सुविधा, सम्मान को पसन्द कर लेता है। जो अपना नहीं है उसकी पसन्द कर लेने से जो सदा-सदा का अपना है उसकी विस्मृति हो जाती है। शरीर और संसार को अपना मत मानो, अपने लिए मत मानो तो इसकी आसक्ति मिट जाएगी और योग, बोध, प्रेम की प्राप्ति हो जाएगी। जीवन का सत्य क्या है? स्मृति और प्रियता में जीवन है। स्मृति और प्रियता की आवश्यकता का अनुभव करने मात्र से भोग की रुचि का नाश होता है। जिसके होने से योग की प्राप्ति होती है, योग से बोध की और बोध से प्रेम की प्राप्ति होती है। यह सत्संग से ही सिद्ध है। सत्संग मनुष्य का स्वधर्म है। स्वधर्म पालन से जीवन पूर्ण होता है। व्यर्थ चिन्तन को किसी सार्थक चिन्तन से दबाकर उसका नाश नहीं किया जा सकता। जीवन में जब रस घटता है, तब व्यर्थ चिन्तन बढ़ता है। उदारता, स्वाधीनता और प्रेम के रस से व्यर्थ चिन्तन का नाश होता है।

सरल भक्त भगवान को प्रिय होते हैं

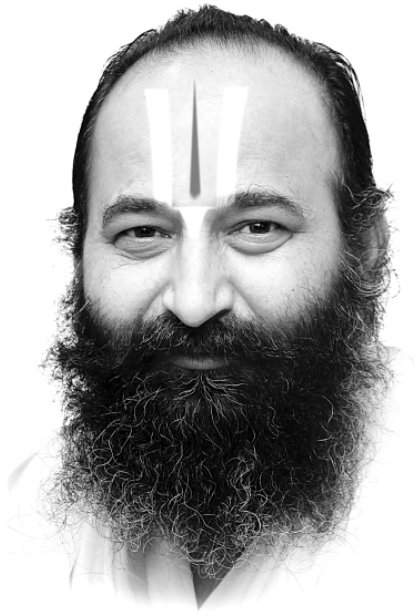

भगवान शबरी को नवधा भक्ति का ज्ञान देते हुए खुद कहते हैं–
नवम सरल सब सन छल हीना।
मम भरोस हियं हरष न दीना।।

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज,
पीठाधिपति–श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

सरलता को नौवीं भक्ति कहते हैं– भगवान को सरल हृदय पसंद हैं।

लेकिन ध्यान देने वाली बात है– भगवान का मिलना उतना कठिन नहीं है। जितना हमारा सरल होना।
सरलता सबसे ज्यादा कठिन है।
इतना सरल जो सरलता से विश्वास कर ले।
एक भक्त की बात मैंने सुनी थी। वो घर में रहता। घरवाले उससे बड़े परेशान– क्योंकि वो कुछ नहीं करता था। केवल खाता था। बस खूब खाये और पड़ा रहे और खूब खायेगा। तो करेगा क्या। जहां खाये वहीं लुढक जाये। घरवालों ने कहा निकल जाओ यहां से। दो ढाई सेर खाते एक समय में और काम धाम कुछ करते नहीं। बिचारा अब जाये कहां। उसे एक महात्मा दिखाई दिए मंदिर में। जो मंदिर के बाहर बैठे थे। महात्मा बड़े तंदुरुस्त थे। महात्मा होते ही ऐसे हैं। प्रसन्न मस्त। उसने सोचा यह खूब खाते होंगे। तभी तो इतने तंदरुस्त हैं मोटे हैं। उनके पास गया और बोले, महाराज इतने में उनके चेना निकले वो भी ऐसे ही तंदुरुस्त। अरे यहां तो सब ऐसे ही हैं। वो बोला, महाराज हमको भी चेला बना लो। महात्मा बोले, रहो।

मंत्र दे दिया। तुलसी की माला कंठी पहना दी। नाम रख दिया- भोला राम।

काम बताओ। बोले काम कुछ नहीं, भगवान पूजा आरती में रहा करो, राम राम किया करो।

बोले ठीक है- भोला बोला, महाराज पंगत ?

महात्मा बोले- दो समय होती है, खूब प्रेम से भोजन पाओ। मैं दो पंगत में ?

महात्मा बोले, तुम चार पंगत में बैठो। कोई दिक्कत नहीं। उसको लगा यह बढ़िया कुछ करना नहीं। और खाने को माल। यह बढ़िया है। वो मंदिर में ही रह गया।

पर उसे कया पता, यहां भी मुसीबत आएगी। एक दिन सवेरे से कुछ बना ही नहीं भंडार में। सब ऐसे ही चूल्हे पड़े ठंडे, कुछ नहीं।

भोला बोला, महाराज माल कुछ बन नहीं रहा है।

अरे मैंने बताया नहीं, आज एकादशी है। बोला- एकादशी का मतलब ?

महात्मा बोले- ना कुछ बनेगा, ना कुछ मिलेगा।

तो वह बोला- हमको भी नहीं मिलेगा।

हां तुम्हें भी नहीं मिलेगा।

भोला बोला- चेला बहुत हैं। हमसे क्यों करवाओ।

बोला- नहीं ये तो करना ही पड़ेगा। बोला अगर हमें आज एकादशी करा दी तो हम तो द्वादशी देख ही नहीं पाएंगे। आज ही शाम तक खेल खत्म।

महात्मा बोल, भाई बहुत कठिनाई है क्या।

महाराज मैं भोजन के बिना नहीं रह सकता। महाराज बोले-आश्रम तो कुछ बनेगा नहीं। तुम बना लोगे।

मरता क्या नहीं करता। बोला- हम सब बना लेंगे।

महात्मा बोले- जाओ भंडारा से सामग्री ले लो। अब उसने ढाई सेर आटा आलू नमक मिर्च मसाला घी ले लिया।

महात्मा बोले- अब तुम वैष्णव हो गए। वैसे तो नहीं बनाना चाहिए भोजन। पर भोजन प्रसाद बुद्धि से ग्रहण करना। पहले भगवान को भोग लगाना।

ठीक है महाराज।

जल्दी जल्दी में उसने सामान समेटा। महात्मा बोले वहां जाना नदी के किनारे पेड के नीचे। भोला वहां पहुंच गया। जैसा बना बेचारे से वैसा भोजन बनाया। आलू का चोखा, रोटी गुड घी सब तैयार करके, भूख भी लग आई। रोज तो बना बनाया मिलता था। उसे याद आया गुरुजी ने कहा था भगवान को भोग लगा लेना। कितना सरल- तुरंत भगवान को बुलाने लगे।

राजा राम आइये प्रभु राम आइये
मेरे भोजन को भोग लगाइये
मेरे भोजन को भोग लगाइये
नहीं आए भगवान तो क्या बोला।
आचमनी अर्घा ना आरती यहां यही मेहमानी।
रूखी रोटी पाओ प्रेम से पीओ नदी का पानी।
राजा राम आइये प्रभु राम आइये
मेरे भोजन को भोग लगाइये।

यहां तो नदी का पानी है। रूखी रोटी है आना हैं तो जल्दी आ जाओ। हमको भूख लग रही है। भगवान नहीं आए।

तो बोला- पूडी और कचौडी भगवान के सेवक ने ना बनाई
और मिठाई तो है ही नहीं।

फिर भी नहीं आए भगवान तो एक सरलता से बात कही। उस पर रीझ गए भगवान। बोले, सुनो हम समझ गए आप इसलिए नहीं आ रहे यहां। रूखी रोटी काहे को जाएं खाने, नदी का पानी। मंदिर में तो तरह तरह के व्यंजन मिलेंगे। तो बोला, भगवान उस धोखे में नहीं रह जाना। वहां से तो जान बचाकर हम ही आए हैं।

भूल करोगे यदि तज दोगे भोजन रूखा सूखा
एकादशी आज मंदिर में बैठे रहोगे भूखा
राजा राम आइये प्रभु राम आइये
मेरे भोजन का भोग लगाइये।

मंदिर में एकादशी है। यहां आ जाओ और इस सरलता पर –
नवम सरल सब सन छल हीना..
भगवान प्रकट हो गए।
लेकिन भगवान भी कम कौतुकी नहीं। जितना वो सरल भगवान वैसे ही लीला करने को तैयार। भगवान अकेले नहीं आए।
सीता समारोह पित वाम भागे
भगवान को देखा, उनकी सुन्दरता देखी, देखकर प्रसन्न तो बहुत हुआ लेकिन उदास हो गया। गुरुजी ने तो एक भगवान के लिए कहा था। ये तो दो आए हैं। अब कभी भगवान की तरफ देखे कभी रोटियों की तरफ देखे। भगवान ने कहा–क्यों। आ गए ना हम, बोले–हां। आ गए सो तो ठीक है। जो है सो बैठो। भगवान बोले–क्या बात है। भोला बोला– हम सोच रहे थे एक का इंतजाम करना है, आप तो दो हैं। तो कोई बात नहीं, थोड़ी बहुत एकादशी तो हमारी करा ही दोगे आप लोग। जो कुछ है सब बिराजो।
कितना सरल है कि विश्वास भी नहीं होता। क्योंकि हम लोग सरल नहीं हैं। भगवान श्री सीताराम जी बैठ गए।
उनके सामने परोस दिया। मैं भूखा तो रहा पर आपको देचा कर लगा बहुत अच्छा। पर एक काम करना, अब मैं समझ गया, आप दो आते हो। अब मैं इंतजाम और ज्यादा करके रखूंगा।
अगली एकादशी को, लेकिन इतना परेशान नहीं करना। जल्दी आ जाना।
भगवान बोले– आ जाऊंगा।
उसने आकर गुरुजी से कुछ नहीं कहा– इतना सरल था। वो समझता था, भगवान ऐसे ही आते होंगे।
अगली एकादशी को बोला– गुरुजी कुछ सामान बढवाओ।
गुरुजी बोले– क्यों। बोले–वहां दो भगवान आते हैं।
गुरुजी ने सोचा, भूखा रहा होगा। इसलिए कह रहा है। बोला–बढा दो , बढ़ा दो। एक सेर सामान और बढ़ा दो।
अब वो साड़े तीन सेर आटा सामान लेकर गया भोजन बनाया उसने और बुलाया भगवान को। भगवान तो इंतजार ही कर रहे थे। जैसे ही उसने कहा– राजाराम आइये। सीताराम आइये। मेरे भोजन का भोग लगाइये। मेरे भोजन को भोग लगाइये।
जैसे ही पुकारा, भगवान प्रकट हो गए। लेकिन
इस बार राम बाम दिस जानकी लखन दाहिने ओर–
दक्षिणो लक्ष्मणो।
वो उसने तीनों को देखा। बोला– हद हो गई। एक को बुलाओ तो दो आते हैं, और दो का इंतजाम करो तो तीन आते हैं। ये कौन हैं महाराज। भगवान बोले– ये हमारे छोटे भाई हैं। हूं। छोटे भाई। सचमुच। लगते तो नहीं। ना रूप से ना स्वभाव से, कहीं से नहीं लगते।
पकड़ लाए क्या कोई.. नहीं नहीं हमारे छोटे भाई हैं।
हाथ जोड़कर बोला, प्रभु बुरा नहीं मानना छोटे भाई हैं सो तो अच्छा है। आ गए तो कोई बात नहीं लेकिन एक बात बताओ। हमने ठाकुर जी के भोग का ठेका लिया है या ठाकुर जी के खानदान का। पूरे घर का। गुरुजी ने कहा था भगवान को भोग लगाना– दो आए अब ये भाई साहिब भी आ गए।
अब रामजी खूब हंसे जाएं। जानकी मैया भी हंसी। लक्ष्मण को लगा अच्छी जगह ले आए भगवान। क्या स्वागत हुआ है आज।
लेकिन वो बोला, क्या कहूं। भूखा भले रह जाऊं पर आप लोगों को देखकर मुझे बड़ा अच्छा लगा। अब बैठो। तीनों की बैठो। पावो अब जो कुछ है, एक ही ज्यादा है। दो का इंतजाम तो है ही। भगवान खूब हंसते रहे। लक्ष्मण जी भी खूब हंसे।
जब चलने लगे तो बार बार चरणों में गिर रहे आंखों में आंसू आ जाएं। लगते आप बड़े सुंदर हो लेकिन एक काम करो। अगली एकादशी को अभी से बता जाओ, कितने आओगे। ताकि हम उतना ही इंतजाम करें।

बस यही झंझट हैं। बाकी तो कोई झंझट नहीं। पहले बता दिया करो कितने आओगे। तो वैसे ही इंतजाम कर लें। भगवान बोले- हम आ जाएंगे-

आया तो भी नहीं कहा गुरुजी से- सोचा कुछ दिन तो आराम से बीतें- अब फिर अगली एकादशी- गुरुजी बोले आज एकादशी है चेला। बोला - हां आज एकादशी है।

तो उदास क्यों है। बोला- अरे महाराज वहां बहुत लोग आते हैं। तो क्या करें। हमारा सामान बढ़ाओ। सात सेर आटा करो। कम से कम सात सेर। हां और उसी हिसाब से सामान।

गुरुजी समझ गए इतना तो ये खा नहीं सकता। ये जरूर बेचता होगा। गुरुजी बोले, सात सेर नहीं, आठ सेर दे दो। ले जाने दो इसे और पीछे पीछे चलें, देखते हैं यह क्या करता है।

ले गया सामान लेकिन यह भक्त बड़ा विचित्र सरल आदमी है।

आज उसने भोजन बनाया नहीं। बोला- पहले बुला लेता हूं कि कितने आदमी हैं। तभी भोजन बनाउंगा।

भोजन बनाने से पहले ही बुलाने लगा

राजाराम आइए सीताराम आइए, लक्ष्मण राम आइये

मेरे भोजन को भोग लगाइए

जब जंगल में भक्त ने कीन्ही प्रेम पुकार

तब प्रकट दिव्य राम दरबार।

जो पुकारा तो भगवान सीताराम भरत जी, लक्ष्मण जी,शत्रुघ्न जी, हनुमान जी, सारे आ गए।

और जो इसने देखा। बोला- जय हो, जय हो लेकिन एक बात सुन लो। क्या। एक को बुलाया तो दो आए, दो को बुलाया तो तीन आए। आज तो हद कर दी, सारे इकट्ठे। लेकिन हमारी बात भी सुन लो। क्या। हमने भोजन नहीं बनाया है। वो रखा सामान। सो बनाओ और खाओ।

भगवान बोले- क्यों। तुम क्यों नहीं बनाते। बोला- तब हमें भोजन मिलना ही नहीं है तो बनाने से क्या लाभ। आप ही बनाओ और पाओ।

मोते नहीं बनत बनाये, भोजन आप बनावहुं अपने

बहुत दिन संग पाये, मोते नहीं बनत बनाये।

तुम नहीं तजत सुब्रान आपकी हम केते समझाये।

हमने कितना समझाया अपनी आदत छोड़ दो। और आज तो आपने हद कर दी।

नर नारिल को कौन कहे, हनुमान जी की ओर देखकर बोला

इस वानर भी संग लाये। इक वानर हु संग लाए।

मोते नहीं बनत बनाये।

हम से नहीं बनता है।

प्रथम दिवस जब भोजन के हित आसन मैंने लगाई

उधर में न भई सब्यो जब सिय सन्मुख आई

फिर आये भाई पर भाई

और निराहार ही रहो आग में परत दिखाई

भगवान खूब हंसे। बोले- हंसने से काम नहीं चलेगा। बनाओ और खाओ। और शुरुआत करो। बैठ गया वृक्ष के नीचे।

भगवान बोले- भई भक्त की राजी, आज बनाओ।

भोजन व्यवस्था किसने संभाल ली। विश्व भरण पोषण कर जोई। जाकर नाम भरत अरु होई।

भरत जी रसोई बनाने लगे। लक्ष्मण जी लकड़ी बीनकर लाने लगे। हनुमान जी पोता लगाने लगे। शत्रुघ्न भाजी काटने लगे। जानकी माता आकर बैठी तो तमाम महात्मा इकट्ठे हो गए। हमें भी प्रसाद मिले। हमें भी प्रसाद मिले। वो भोला- आंख बंद किए बैठा था। पूछा, आंख बंद किए क्यों बैठा है।

बोला- जब कुछ मिलना ही नहीं है तो देखने से क्या फायदा।

आवाज सुनी तो देखा कई महात्मा दिखाई दिए। बोला- थोड़ा बहुत कुछ बचता भी तो यह नहीं बचने देंगे।

गुरुजी आए पीछे से देखने कि यह सामान का क्या करता है। तो गुरुजी

को कोई नहीं दिखा। चेला बैठा दिखा और सामान रखा हुआ देखा।

गुरुजी आए और बोले, बच्चा क्या हो रहा है। बोला- गुरुजी भले आए, देखो कितने भगवान मेरे पीछे लगे हैं। इतने बैठे हैं। गुरुजी बोले- हमें तो कोई नहीं दिखाई दे रहा। सामान दिख रहा है और तुम दिख रहे हो। अब भगवान मुस्कुराए तो रोकर बोला। यह दोहरी मुसीबत है। गुरुजी ने तो करा नहीं पाई, तुमने आज पूरी एकादशी करवा दी। और उसमें भी गुरुजी को पता नहीं लगने दे रहे। इनको भी दिखो। भगवान बोले, उन्हें नहीं दिखेंगे।

क्यों नहीं दिखोगे। वो तो हमारे गुरुजी हैं। हम कुछ नहीं जानते, वे तो सबकुछ जानते हैं। इतने महान हैं। भगवान ने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं तुम्हारे गुरु बहुत महान हैं। तुम्हारे गुरु बहुत योग्य विद्वान हैं। भजनानन्दी हैं। फिर भी मैं उन्हें नहीं दिखूंगा। मैं तुम्हें ही दीखूंगा।

बोला- क्यों ऐसी क्या बात है। बोले- तुम्हारे गुरुजी में सब विशेषताएं हैं लेकिन जितने सरल तुम हो, उतने वो सरल नहीं हैं।

और मैं तो सरल के लिए सरलता से मिलता हूं।

नवम सरल सब सन छल हीना..

गुरुजी ने पूछा क्या बात है। चेला बोला- भगवान ऐसो कह रहे हैं। कि आप सरल नहीं हो। गुरुजी को इस बात पर रोना आ गया कि सचमुच सब कुछ जीवन में मिला लेकिन सरलता नहीं मिली। और जिससे भगवान मिलते थे वो ही नहीं मिला। अब गुरुजी भावविभोर होकर रोने लगे। तो भगवान प्रकट हो गए।

और उनको दर्शन दिया। भगवान तो सरलता पर रीझते हैं।

स्तंभ

सितंबर माह के पर्व

2 सितंबर शनिवार पद्मा एकादशी

5 सितंबर मंगलवार अनंत चतुर्दशी, व्रत पूर्णिमा

6 सितंबर बुधवार भाद्र पूर्णिमा महाल्यारंभ, पितृ तर्पण

10 सितंबर रविवार कृष्ण पंचमी

13 सितंबर बुधवार जीवित्पुत्रिका व्रत

16 सितंबर शनिवार इंदिरा एकादशी

17 सितंबर रविवार विश्वकर्मा पूजा

19 सितंबर मंगलवार पितृविसर्जन

21 सितंबर गुरुवार शारदीय नवरात्र

25 सितंबर सोमवार शुक्ल पंचमी, बिल्वाभिमंत्रण

27 सितंबर बुधवार महानिशा पूजा

28 सितंबर गुरुवार दुर्गा अष्टमी

29 सितंबर शुक्रवार महानवमी हवन

30 सितंबर शनिवार विजयादशमी

भक्ति जग जाए तो बेड़ा पार

सारे जीव भगवान् के अंश हैं। वे दो प्रकार के हैं—नित्य मुक्त तथा नित्य बद्ध। नित्य मुक्त शाश्वत रूप से मुक्त जीव हैं और वे भगवान् के दिव्य धाम में, जो दृश्य जगत से परे है, दिव्य प्रेममयी सेवा के आदान-प्रदान में नित्य निमग्न रहते हैं। लेकिन नित्य बद्ध अर्थात् शाश्वत रूप से बद्धजीवों का जिम्मा बहिरंगा शक्ति, माया पर रहता है कि वह परम पिता के प्रति उनकी विद्रोहात्मक मनोवृत्ति को सुधारे।

भक्ति ही एकमात्र रास्ता है, परम पुरुष को पाने का। भक्ति जग गई तो काम पूरा हो गया।

नित्य बद्ध यह सदैव भूले रहते हैं कि भगवान् के साथ उनका सम्बन्ध उनके अंश के रूप में है। वे माया द्वारा पदार्थ के उत्पादों के रूप में मोहग्रस्त रहते हैं और इस तरह वे सुखी बनने के लिए भौतिक जगत में नाना प्रकार की योजनाएँ बनाते रहते हैं। वे इन योजनाओं को खुशी-खुशी आगे बढ़ाते हैं, लेकिन भगवान् की इच्छा से योजना बनानेवाले तथा उनकी योजनाएँ कुछ काल बाद स्वत: ध्वस्त हो जाती हैं। भगवद्गीता (9.7) में इसकी पुष्टि इस प्रकार हुई है, हे कुन्ती-पुत्र! कल्प के अन्त में सारे जीव मेरी प्रकृति में लीन हो जाते हैं और जब पुन: सृष्टि करने का समय आता है, तो मैं अपनी बहिरंगा शक्ति से सृष्टि प्रारम्भ करता हूँ। भूय शब्द पुन: पुन: का सूचक है अर्थात् यह बताता है कि सृष्टि, पालन तथा संहार की क्रिया भगवान् की बहिरंगा शक्ति से अनवरत चलती रहती है। वे ही सबके कारण हैं। लेकिन सारे जीव, जो स्वाभाविक रूप से भगवान् के अंश हैं और मधुर सम्बन्ध को भुलाये रहते हैं, उन्हें

बहिरंगा शक्ति के चंगुल से छूटने का अवसर पुन: प्रदान किया जाता है। और जीव की चेतना को पुर्नजागृत करने के लिए, शास्त्रों की सृष्टि भी भगवान् ही करते हैं। बद्धजीव के लिए वैदिक वाङ्मय दिशा निर्देश करनेवाला है, जिससे वे भौतिक जगत तथा भौतिक शरीर की सृष्टि तथा संहार के पुनरावर्तन से मुक्त हो सकें। भगवद्गीता में भगवान् कहते हैं, यह उत्पन्न हुआ जगत तथा भौतिक शक्ति मेरे वश में हैं। प्रकृति के प्रभाव से, वे स्वत: बार-बार उत्पन्न होते हैं और यह सब मेरे द्वारा मेरी बहिरंगा शक्ति के माध्यम से किया जाता है। वस्तुत: आध्यात्मिक स्फुड्क्षलग-रूपी जीवों का कोई नाम या रूप नहीं होता। लेकिन भौतिक रूपों तथा नामों की भौतिक शक्ति पर प्रभुत्व जताने की इच्छा-पूर्ति के लिए, उन्हें ऐसे झूठे भोग का अवसर प्रदान किया जाता है और उसी के साथ ही साथ उन्हें शास्त्रो के माध्यम से वास्तविक स्थिति को समझने का अवसर दिया जाता है। मूर्ख तथा भुलक्कड़ जीव सदैव झूठे रूपों तथा झूठे नामों में व्यस्त रहता है। आज की आधुनिकता ऐसे झूठे नामों तथा झूठे रूपों की चरम परिणति है।

मनुष्य झूठे नाम और मिथ्या रूप के पीछे पागल बने रहते हैं। किन्हीं परिस्थितियों में प्राप्त शरीर के रूप को वास्तविक मान लिया जाता है और इस प्रकार से प्राप्त नाम एवम बल पर शक्ति का दुरुपयोग करने में बद्धजीवों को मोहित करता है। तथापि शास्त्र वास्तविक स्थिति को समझने के लिए संकेत प्रदान करते हैं, किन्तु लोग विभिन्न देश-काल के लिए भगवान् द्वारा निर्मित शाश्त्रो से शिक्षा ग्रहण करते हुए कतराते हैं। उदाहरणार्थ, भगवद्गीता प्रत्येक मानव के लिए पथप्रदर्शिका है, लेकिन भौतिक शक्ति के जादू से वे भगवद्गीता द्वारा बताई गई जीवन-शैली को नहीं अपनाते।

भाव में ही भाव है

भाव मूल है भक्ति में, साधन बिघ्न अनेक ।
सदा समर्पण मन रहे, सो जानहि प्रभु एक ।
सो जानहि प्रभु एक, सत्ता जिनकी बलिहारी ।
त्रिदेव सहित, दैव अनेक, बिबिध भांति पुजारी ।
कथा प्रकार अनन्त है, कोटि कोटि मिलावट ।
सुना रहे बहु जतन से, बाद्य यंत्र सजावट ।
इनसे सुलभ हरि नहीं, जब तक चित्त ना भाव ।
समदर्शी प्रभु आप है, समदर्शी भाव सुभाव ।
शुभ संकल्प है आपका, कीजै कथा प्रकाश ।
धन्यभाग्य हम सबन्ह का, उपजहि मन विश्वाश ।
गहरी प्रीत प्रभु नाम में, अरु प्रभुशरण संकल्प
भगवत्कृपा हि केवलम्, पूर्ण होय प्रकल्प ।।

पुराने जन्मों के संस्कार

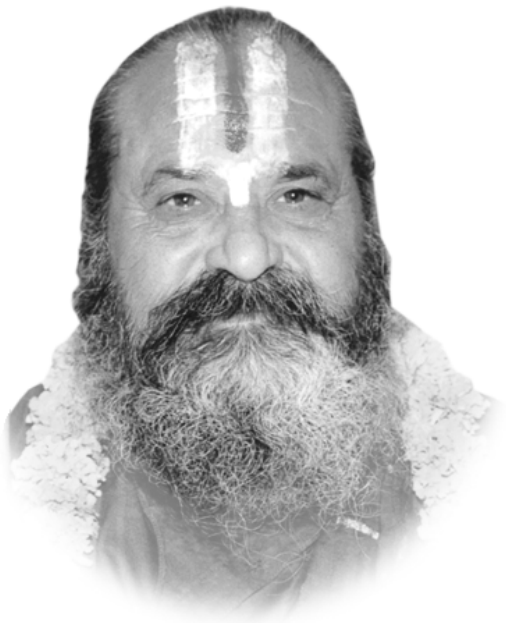

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

हमारे साथ पुराने जन्मों के संस्कार बंधे हुए हैं जिसके लिये मैं कह दिया करता हूं कि जीव तो सच्चा है, परम पवित्र है क्योंकि जीव परमात्मा का अंश है, उसका बेटा है।

'ईस्वर अंस जीव अविनासी'। जीव मरता जन्मता रहता है, पर है परमात्मा का बेटा। उसके वंश के हैं, उसके अंश हैं हम लोग। पर हमें सत्संग की आवश्यकता क्यों पड़ गई? ऐसा विद्वान लोग तर्क कर देते हैं। यह जरूरत इसलिए पड़ गई कि हमारे जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों से काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मात्सर्य हमारे साथ जुड़ गये। इनको हम छोड़ नहीं पा रहे हैं। इनको छोड़े बिना यह जीव निर्मल नहीं हो सकता और **'निर्मल मन जन सो मोहिं पावा'।** निर्मल जन ही तो मुझे प्राप्त कर सकता है, वही तो मुझे प्रिय लगेगा और इनको छोड़े बिना मन निर्मल हो नहीं सकता, जिसके उपलक्ष्य में मैं सुना दिया करता हूं राजा वाली बात।

एक राजा के पुत्र को कंजर उठा कर ले गये। कंजरों ने अपनी बस्ती में ले जा कर उसे पालना शुरू कर दिया। कुछ समय के पालन पोषण के बाद वह अच्छा पहलवान हो गया, खा पी कर के मस्त हो गया उधर बादशाह बहुत देर तक रोता रहा। उसकी

नेत्र ज्योति भी जाती रही, अश्रुपात होते रहे–मेरा बेटा कहां चला गया? मर गया होगा। रानी भी रो-रोकर अन्धी हो गई। रुदन-क्रन्दन चल ही रहा था कि एक सन्त आये और कहने लगे कि आपका बेटा जीवित है। राजा बोला, कहां है? संत बोले, कंजरों की बस्ती में है। राजा बोला, मंत्री! तुरन्त चतुरंगणी सेना सजाओ और कंजरों की बस्ती को घेर लो। हमें अपना पुत्र चाहिये। मंत्री तो तैयार हो गये, पर महात्मा कहने लगे कि तुम ले तो आओगे उसको, पर यदि उसने कह दिया कि मैं तेरा बेटा ही नहीं हूं, तो आप क्या कर लोगे? क्या उसे मार दोगे? वह स्वीकार ही न करे तो? राजा बोले, हां, यह बात तो ठीक है। क्या करना चाहिये? सन्त बोले, पहले मैं जाऊंगा, कोशिश करूंगा, शायद मान जाये। वहां जाकर के संत जी बहुत दिनों तक सत्संग ही देते रहे। पर सत्संग में वह यही कहते रहे कि बेटा! तू चक्रवर्ती राजा का बेटा है। बोला, हे बाबा! तुझे अगर बस्ती के आस पास रहना है तो चुपचाप रह, बकवास करने की जरूरत नहीं है। कहने लगा कि बाबाजी! अगर तुझे रहना है तो चुपचाप रह ले और तूने फिर यह बात कही कि तू चक्रवर्ती राजा का बेटा है तो बाबा! तेरी गर्दन दबा दूंगा। संत बोले, अच्छा भाई! तेरी मर्जी है। कह तो हम ठीक रहे हैं, चाहे हाथ तोड़ दे, चाहे गर्दन दबा दे, पर हम जो कह रहे हैं ठीक कह रहे हैं। ऐसे ही कभी दूसरे दिन, कभी तीसरे दिन, कभी चौथे दिन, लगातार कहता ही रहा। एक दिन उस लड़के के दिमाग में आया कि वह बार-बार कह रहा है, कुछ तुझ से ले नहीं रहा, रोटी को तुझे कहता नहीं, कपड़े की तुझे बोलता नहीं और आज तक नमक तक भी तुझ से मांगा नहीं, जरूर कोई न कोई बात तो है। बोला, बाबा! बता दे मेरे बाप का क्या नाम है? बाबा बोला, नहीं बताता, पर है तू बादशाह का बेटा। अब वह लड़का दिन में कई बार आने लगा और यही पूछने लगा कि बाबा! मेरे पिता का नाम बता दे कि मैं कौन से महाराजा का बेटा हूं? संत बोला, मैं तेरे बाप का नौकर नहीं हूं, नहीं बताता। तुझे जो करना है सो कर ले। हम तो बाबा जी हैं, सोटी लंगोटी उठाकर चल देंगे, नहीं बताते। कहने का भाव यह है कि उसको व्यग्रता आ गई। मैं वही बोल रहा हूं, कि जब तक लक्ष्य में व्यग्रता नहीं आयेगी तब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी। इस तरह उसको व्यग्रता आ गई, तेजी आ गई और रुदन करने लग गया कि बाबा! बता दे, नहीं तो आज मैं जहर खा के मरूंगा, फांसी लगा कर मरूंगा। बाबा बोले, ठीक है, फिर तो बता देंगे। चल हमारे साथ। उसका मिलान करा दिया राजा से। राजा ने कहा, आ बेटे! मुझे खुशी मिली कि तू आ गया।

हमें सत्संग की आवश्यकता इसलिए पड़ गई कि हमारे जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों से काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मात्सर्य हमारे साथ जुड़ गये। इनको छोड़े बिना यह जीव निर्मल नहीं हो सकता

श्रीगुरूकृपा केवलं

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम शिवरात्रि पर कांवडियों को निहाल करते, 2.त्रिलोकपुरी में कांवड शिविर 3. मीठापुर में कांवड शिविर एवं, 4.त्रिलोकपुरी में एक अन्य कांवड शिविर में भक्तों को निहाल करते श्री गुरू महाराज, 5.श्री गुरू महाराज को राखी बांधते ब्रह्माकुमारी मधु व अन्य 6 हरित हरियाणा के तहत पौधरोपण एवं पौधा वितरण कार्यक्रम में मौजूद केबिनेट मंत्री श्री विपुल गोयल जी एवं पौधारोपण के वक्त मिट्टी डालते उपमहापौर श्री मनमोहन गर्ग जी 7. श्री गुरू महाराज के दर्शन को पहुंचे मार्केट कमेटी के चेयरमैन मुकेश शास्त्री व अन्य, 8 गंगोत्री स्कूल के बच्चे दिव्यधाम में प्रसन्नता जताते एवं 9 सेवादारों को प्रसाद वितरण करते श्री गुरू महाराज।

1

3

4

5

6

7

8

9

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/16-18
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 14 & 15 of every month

आश्रम में आगमन

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में पधारे 1.श्री वरदराज कुंज बडा खटला वृंदावन के उत्तराधिकारी स्वामी श्री रामेश्वराचार्य जी, 2. डा स्वामी पुरूषोत्तमाचार्यजी, 3. स्वामी श्री अच्युत प्रपन्नाचार्य जी, 4. स्वामीश्री सुदर्शनाचार्य जी,5. इंडिया टीवी के न्यूज डाइरेक्टर श्री हेमंत शर्मा जी सपत्नीक 6 इनेलो नेता श्री दिग्विजय चौटाला, 7 उप्र से भाजपा विधायक श्री आर के शर्मा जी, 8 वरिष्ठ आईएएस श्रीसंजय गर्ग जी सपत्नीक एवं 9 फरीदाबाद निगमायुक्त डा सोनल गोयल जी अपने पति एवं दिल्ली में जीएसटी आयुक्त श्री आदित्य सिह यादव जी के साथ।

1

2

3

4

5

6

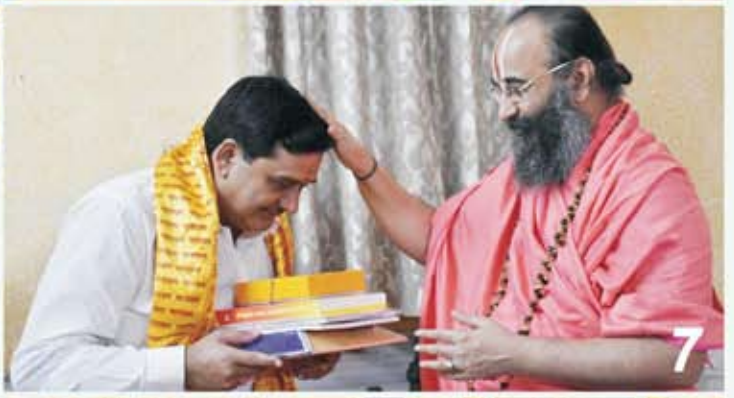
7

8

9

जनहित मानव कल्याण केंद्र के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–795, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित व ई–9 मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक–शकुन रघुवंशी' अवैतनिक